सेब पेड़ के कितने करीब गिरता है?*

अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता पर भारत से कुछ साक्ष्य

श्रीपद मोतीराम, आशीष सिंह

भारत मानव विकास सर्वेक्षण 2005 के डेटा का उपयोग करते हुए, यह लेख भारत में अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता की जाँच करता है, एक ऐसा मुद्दा जिस पर बहुत कम व्यवस्थित और श्रमसाध्य अध्ययन मौजूद हैं। यह व्यक्तियों को वर्गों में समूहीकृत करता है, और ग्रामीण, शहरी व अखिल भारतीय स्तरों पर तथा विभिन्न जाति समूहों के लिए गतिशीलता के पैटर्न का दस्तावेजीकरण करता है। यह अध्ययन अन्तर-पीढ़ियों में बहुत अधिक व्यवसायिक निरन्तरता पाता है, विशेषकर निम्न-कौशल और निम्न-भुगतान वाले व्यवसायों के मामले में, उदाहरण के तौर पर कृषि मजदूरों के बच्चों में से लगभग आधे अन्ततः कृषि मजदूर बनते हैं। यह लेख विभिन्न जाति समूहों की गतिशीलता में अन्तर को भी दस्तावेजीकृत करता है। कुल मिलाकर, ये परिणाम भारत में अवसर की भारी असमानता को इंगित करते हैं।

1. भूमिका

समाज का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में रूपान्तरण, किसी भी समाज के बारे में एक बुनियादी मुद्दा है जिसका अध्ययन किया जा सकता है। क्या बच्चे एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो उससे बहुत अलग है जिसमें उनके माता-पिता का जीवन गुजरा? क्या वे बेहतर व्यवसायों में शामिल हैं? क्या वे बेहतर शिक्षित हैं? क्या रूपान्तरण की यह प्रक्रिया 'न्यायसंगत' है, जो हर किसी को बराबर अवसर प्रदान कर रही है? 1980 के दशक के मध्य से भारत जिस अभूतपूर्व वृद्धि[1] का अनुभव कर रहा है और यह धारणा कि यह एक नई विश्व व्यवस्था का संकेतक है, के चलते हाल के दिनों में भारत के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है।[2] फिर भी, उपरोक्त प्रश्नों पर अपेक्षाकृत कम ही ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस लेख में, हम इस मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए भारत मानव विकास सर्वेक्षण (IHDS) 2005 के डेटा का उपयोग कर रहे हैं।

---

* Economic and Political Weekly के अंक 24, संख्या 40 से उद्धृत।

भारतीय असमानता, अपने अनेक आयामों में, भारत और विदेशों दोनों जगहों में, तथा अकादमिकों और बुद्धिमान जनसाधारण के बीच आज एक अत्यन्त रुचि का विषय है। ऐसा आंशिक रूप से इस चिन्ता के कारण है कि भारत में जिस तेजी से विकास हो रहा है वह असमतामूलक हो सकता है, लेकिन इस डर के कारण भी है कि उच्च और/या बढ़ती असमानता वृद्धि को अवरुद्ध कर सकती है।[3] दरअसल, एक प्रमुख लेखक और विद्वान (Guha2011) ने यह तर्क भी दिया है कि आज असमानता (भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय गिरावट के साथ) एक बहुल और समावेशी 'भारत की संकल्पना' के लिए एक 'भौतिकवादी और बोझिल' चुनौती बन गई है। साथ ही, 1990-91 के बाद से भारत जिन आर्थिक सुधारों को लागू कर रहा है उन पर काफी बहस मौजूद है, और इस बहस में असमानता एक महत्त्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरी है। नतीजतन, भारतीय असमानता पर कुछ अध्ययन (उदाहरण के लिए, Jayadev et al 2007; Vakulabharanam 2010; Sarkar and Mehta 2010; Krishna and Setupathy 2011, Motiram and Sarma 2011; Motiram and Vakulabharanam 2011; Weisskopf 2011) हाल के दिनों में दिखाई दिए हैं। हालाँकि, इनमें से अधिकतर अध्ययनों ने किसी विशेष 'परिणाम' (आउटपुट) चर (उदाहरण के लिए, उपभोग व्यय, मजदूरी, या सम्पदा) पर ध्यान केन्द्रित किया है और यह पता लगाया है कि समय के साथ इस चर में असमानता कैसे परिवर्तित हुई है। इसके विपरीत, केवल कुछ ही ऐसे अध्ययन हैं जो अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता के मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जो वास्तव में इससे सरोकार रखते हैं कि वर्तमान पीढ़ी के परिणाम किस सीमा तक पिछली पीढ़ी की विशेषताओं पर निर्भर करते हैं, या उससे प्रभावित होते हैं।[4]

गतिशीलता (अन्तर पीढ़ी या अन्तरवैयक्तिक) का अध्ययन क्यों किया जाए? गतिशीलता में अन्तर, विभिन्न चैनलों के माध्यम से, विभिन्न परिणामों विशेष रूप से विभिन्न विकास दरों का कारण बन सकता है। यह मानते हुए कि प्रतिभा का विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों में समान रूप से वितरण हो सकता है, एक उच्च गतिशील समाज अपने सदस्यों की प्रतिभाओं का बेहतर उपयोग करके तेजी से बढ़ने में सक्षम हो सकता है (Weil 2009: 432)। ऐसे ही परिणाम काम के लिए प्रेरणा के माध्यम से भी उत्पन्न हो सकते हैं– एक ऐसे समाज में जहाँ गरीब और अमीर (और उनके बच्चे) सफल या असफल होने की समान सम्भावना रखते हैं, उसमें किसी भी समूह से सम्बन्ध रखने वाले लोगों के पास कड़ी मेहनत करने के लिए उच्च प्रोत्साहन हो सकता है

(Bourguignon et al 2007)। इसके अलावा, उच्च गतिशीलता (वास्तविक या अनुभूत) सामाजिक संघर्ष और पुनर्वितरण नीतियों के लिए दबावों को मन्द या मौन कर सकती है, जिन दोनों का आर्थिक विकास के लिए निहितार्थ है।[5] अन्ततः, गतिशीलता अवसर की असमानता के साथ निकटता से बँधी हुई है। अवसर की असमानता पर साहित्य बहुत विस्तृत है और अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र व राजनीतिक दर्शन समेत कई अनुशासनों में फैला हुआ है, इसलिए यह इसमें विस्तार में जाने की जगह नहीं है। फिर भी, अवसर की असमानता पर एक प्रभावकारी व (हमारी राय में) तर्कसंगत परिप्रेक्ष्य (Roemer 1998, 2006) यह मानता है कि, मोटे तौर पर, लोग अपने जीवन में जो हासिल करने में सक्षम होते हैं, वह कारकों के दो समूहों पर निर्भर करता है– वे जो उनके नियन्त्रण में होते हैं ('प्रयास') और वे जो उनके नियन्त्रण में नहीं होते हैं ('परिस्थितियाँ', उदाहरण के लिए, जेंडर, नस्ल, जाति, आदि), और इन कारकों में लोगों को पहले समूह के कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, लेकिन दूसरे समूह के कारकों के लिए नहीं। अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता के निम्न स्तर वाले समाजों में, एक व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि (उदाहरण, माता-पिता की शिक्षा, माता-पिता का व्यवसाय), उसके जीवन की सम्भावनाओं को तय करने में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य से (चूँकि कोई व्यक्ति अपने परिवार का चयन नहीं करता है) ऐसे समाजों की एक प्रमुख विशेषता अवसर की असमानता का उच्च स्तर है।

उपर्युक्त के प्रकाश में, हम अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। इस पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए मुख्य प्रेरणा यह है कि व्यवसाय उस जीवन को निर्धारित करता है जिसे लोग जीते हैं। यह एक ऐसा विचार है जिसे समाजशास्त्रियों द्वारा प्रबलता से स्थापित किया गया है :

> ...व्यवसाय किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, जीवन की सम्भावनाओं और भौतिक आराम के स्तर में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है...एक ही व्यवसाय से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति सामाजिक लाभ या हानि के समान स्तरों का अनुभव करते हैं, तुलनीय जीवन शैलियों को बनाकर रखते हैं, और जीवन में एक जैसे अवसर साझा करते है...(Giddens 2009: 443)।

व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन

कई अर्थशास्त्रियों द्वारा भी इस बिन्दु की सराहना की गई है– हालिया अर्थशास्त्र में उपलब्ध साहित्य ने प्रयोगात्मक साक्ष्य के आधार पर तर्क दिया है कि हमारे व्यवसाय हमारी मान्यताओं, मूल्यों और प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं, और इस प्रकार हमारे चयनों को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।[6] इसके अलावा, भारत जैसे देशों में जहाँ गरीबी में घटोतरी का लक्ष्य व्यावसायिक संरचना के रूपान्तरण के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है (Chakravarty,1987), व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन नीति-निर्माताओं और योजनाकारों की सहायता कर सकता है, क्योंकि यह उन बाधाओं को समझने की अन्तर्दृष्टि दे सकता है जो व्यक्तियों की निम्न-कौशल/निम्न-भुगतान करने वाले व्यवसायों से बेहतर व्यवसायों में स्थानान्तरित होने की क्षमता को सीमित करती हैं। व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन अन्य प्रकार की गतिशीलताओं (उदाहरण, आय, मजदूरी, शिक्षा) के अध्ययन का पूरक है। जैसा कि हमने नीचे वर्णन किया है, हम जो डेटा उपयोग कर रहे हैं वह शैक्षिक और व्यावसायिक गतिशीलता का विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त है, और इस डेटा का उपयोग करके शैक्षिक गतिशीलता का अध्ययन किया गया है। लेकिन, एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रोजगार के लिए 'साधन' के रूप में शिक्षा की केवल एक सीमा तक ही भूमिका होती है, और चूँकि राज्य नीतियाँ, श्रम बाजार की स्थितियाँ, सामाजिक मानदण्ड, भेदभाव, नेटवर्क तक पहुँच, आदि जैसे कारक किसी व्यक्ति की नौकरी पाने की क्षमता को अलग या स्वतन्त्र रूप से (यानि, शैक्षिक योग्यता के अतिरिक्त) प्रभावित करते हैं, इसलिए व्यावसायिक गतिशीलता का अलग से अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। उपर्युक्त समस्त चर्चा को देखते हुए, हम मानते हैं कि ऐसे प्रश्नों को पूछना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि : क्या एक किसान के बेटे की सम्भावना किसान बनने की ही है?

समाजशास्त्रियों द्वारा व्यवसायिक गतिशीलता का अध्ययन व्यापक रूप से किया गया है (उदाहरण के लिए, Erikson and Goldthorpe 1992; Ganzeboom and Treiman1996; विस्तृत सर्वेक्षण के लिए Björklund and Jantti 2000 देखें), जिन्होंने मार्क्स और वेबर के विचारों को आधार बनाते हुए, व्यवसायों का उपयोग 'सामाजिक वर्ग' या 'हैसियत/ प्रतिष्ठा समूह' की अवधारणा के विकास के लिए किया है। पर व्यावसायिक गतिशीलता को अर्थशास्त्रियों से अपेक्षाकृत कम ही ध्यान प्राप्त हुआ है, और जिस सीमा तक उन्होंने इसका अध्ययन किया है, उनमें से अधिकाँश ने ऐसे वर्गीकरणों (उदाहरण के लिए, 'सफेद कॉलर', 'ब्लू कॉलर', घरेलू सर्वेक्षणों से निकाले गए

व्यावसायिक कोडों के संयोजन) का उपयोग किया है, जिनका सैद्धान्तिक आधार स्पष्ट नहीं हैं। ऐसा रोमर (Roemer, 1982) और अन्य अर्थशास्त्रियों के बावजूद है जिन्होंने (क्रेडिट बाधाओं को शामिल करके, Bowles 2006, अध्याय 10 देखिए) उनके काम को आधार बनाया है और दिखाया है कि कैसे एक सूक्ष्म आर्थिक मॉडल के अन्तर्गत व्यावसायिक समूह/वर्ग उभरते हैं। हम इस मुद्दे को इस साक्ष्य को देखते हुए गम्भीरता से ले रहे हैं कि वर्ग (जिन असंख्य तरीकों से इसकी कल्पना की जा सकती है) का आधुनिक समाजों को समझने में भारी विश्लेषणात्मक महत्त्व है।[7] इसलिए, हमने व्यक्तियों को ऐसी श्रेणियों में समूहित किया जिनकी सामाजिक वर्ग या प्रतिष्ठा समूह के रूप में व्याख्या की जा सकती है। इन श्रेणियों का उपयोग करके, हमने संक्रमण आव्यूहों के निर्माण और गतिशीलता के मापों की गणना के द्वारा अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता की जाँच की है।

भारत में अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता पर कुछ हालिया राष्ट्रव्यापी अध्ययन हुए हैं और हमारा लेख उनसे सम्बन्धित है।[8] पर हमारा डेटा, शोध-कार्यप्रणाली और फोकस काफी अलग हैं, इसलिए हमारा लेख इन अध्ययनों का पूरक है। इनमें से दो (Majumdar 2010; Hnatkovska et al 2011) ने राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (NSS) के डेटा का उपयोग किया है। एन.एस.एस. (और इन पर आधारित अध्ययनों) के कुछ फायदे हैं, लेकिन जब इसका अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता, विशेष रूप से व्यावसायिक गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए उपयोग किया जाता है तो इसके कुछ नुक्सान भी हैं। हमने इन सीमाओं पर आगे के खण्ड में चर्चा की है।

हमारा लेख कुमार व अन्य (2002ए, 2002बी) का भी पूरक है जिसने सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (CSDS) से मतदाता डेटा का उपयोग किया है। भारतीय मतदाताओं के याद्दच्छिक प्रतिदर्श पर आधारित यह आँकड़ा थोड़ा पुराना है (1971 और 1996)। इसके अलावा, प्रतिदर्श आकार अपेक्षाकृत छोटे हैं और विश्लेषण उत्तरदाता और उत्तरदाता के पिता के मुख्य व्यवसाय के बारे में एक-एक प्रश्न पर आधारित है, जिसके चलते कुछ सीमाएँ (उदाहरण के लिए, व्यवसाय के विवरण की कमी; व्यवसाय और व्यावसायिक हैसियत के बीच अन्तर में कठिनाई) उत्पन्न होती हैं।

यह लेख भारत में शिक्षा के अन्तर-पीढ़ी संचरण (inter-generational transmission) (Jalan and Murgai 2008, Maitra and Sharma 2009) की जाँच करने वाले कुछ अध्ययनों से सम्बन्धित है, खासकर मैत्रा और शर्मा (2009) के अध्ययन से, जिसने आई.एच.डी.एस. (2005) के डेटा का उपयोग करके, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तथा पुरुषों और महिलाओं के लिए, भारत में स्कूली शिक्षा और मानव पूँजी के अन्तर-पीढ़ी संचरण का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। कुल मिलाकर, गतिशीलता के सम्बन्ध में उनके परिणाम मिश्रित हैं।[9] हमारा लेख भारत में अवसर की असमानता पर उपलब्ध सीमित साहित्य से भी सम्बन्धित है (उदाहरण, Asadullah and Yalonetzky 2012; Singh 2011); खासकर सिंह के अध्ययन से (2011) जो ऊपर उल्लिखित रोमर (1998, 2006) के फ्रेमवर्क का इस्तेमाल करते हैं। भारत में अवसरों की विस्तृत असमानता के दस्तावेजीकरण के लिए वह आई.एच.डी.एस 2005 के डेटा का उपयोग करते हैं– वयस्क पुरुष मजदूरी और उपभोग पर खर्च में असमानता का एक बड़ा हिस्सा अभिभावकीय विशेषताओं द्वारा समझाया गया है।

हमारे विश्लेषण के विवरण में जाने से पहले, हमारे मुख्य परिणामों को यहाँ पेश करना उपयुक्त होगा। हमने काफी अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक निरन्तरता पाई है, सभी व्यावसायिक श्रेणियों में इस बात की सबसे अधिक सम्भावना है कि बेटा उसी श्रेणी में अपने को पाता है जिसमें उसके पिता थे (उदाहरण, कृषि मजदूरों के बच्चों में से लगभग आधों के लिए ऐसी सम्भावना है)। लेकिन, विभिन्न व्यावसायिक श्रेणियों में भिन्नताएँ हैं– यह सम्भावना कि एक बेटा अपने पिता की व्यावसायिक श्रेणी में आएगा, निम्न कौशल/निम्न भुगतान वाले व्यवसायों के लिए अधिक है। विभिन्न क्षेत्रों के बीच में भी भिन्नताएँ मौजूद हैं। अपेक्षानुसार, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में गतिशीलता अधिक है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों (एस.सी./एस.टी.) और गैर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की गतिशीलता की तुलना से अस्पष्ट परिणाम प्राप्त होते हैं। हालाँकि, हमने अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समूह में काफी निम्नवर्ती गतिशीलता का दस्तावेजीकरण किया है और यह दिखाया है कि गैर-अनुसूचित जनजाति/अनुसूचित जनजाति की तुलना में यह अधिक है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के सम्बन्ध में, हमने निम्न कौशल/निम्न भुगतान वाले व्यवसायों में उच्च निरन्तरता (गैर-अनुसूचित जनजाति/अनुसूचित जनजातियों की तुलना में) भी पाई है। कुल मिलाकर, हमारे परिणाम यह दिखाते हैं कि, जैसा कि एक लोकप्रिय जर्मन कहावत[10] के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है कि सेब पेड़ के नजदीक ही

गिरता है। मोटे तौर पर कहा जाए तो हम मानते हैं कि हमारे परिणाम वर्गों की स्थितियों में, विशेष रूप से निचले वर्गों की स्थितियों के सम्बन्ध में, काफी अपरिवर्तनीयता की स्थिति का संकेत देते हैं। कुल मिलाकर, हम अपने परिणामों की व्याख्या इस तरह करते हैं कि यह भारत में अवसर की भारी असमानता की मौजूदगी का संकेत दे रहा है। यह ध्यान में रखते हुए कि अमीर और सम्पन्न आई.एच.डी.एस. (एन.एस.एस. समेत अन्य सर्वेक्षणों में भी) के आँकड़ों में निम्न प्रतिनिधित्व की सम्भावनाएँ हैं और चूँकि अमीरों के बच्चे काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं (कम से कम मीडिया रिपोर्टों के अनुसार), हम मानते हैं कि अवसर की असमानता उससे कहीं अधिक है जितना हमने दस्तावेजीकरण किया है।

इस लेख के शेष भाग को तीन खण्डों में व्यवस्थित किया गया है। अगला खण्ड सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि, अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता के अध्ययन से सम्बन्धित कुछ मुद्दों और आई.एच.डी.एस. डेटा के विवरण को प्रस्तुत करता है। तीसरा खण्ड हमारे विश्लेषण और परिणामों को प्रस्तुत करता है, और अन्तिम खण्ड हमारे परिणामों पर चर्चा के साथ समाप्त होता है।

2 सन्दर्भ, मुद्दे और डेटा

बच्चे अपने माता-पिता की तुलना में कहाँ पहुँचते हैं, यह घर के भीतर (जैसे, माता-पिता की पृष्ठभूमि, पारिवारिक आकार, पारिवारिक संरचना, जाति, आदि) और घर के बाहर (उदाहरण के लिए, शैक्षणिक अवसरों की उपलब्धता, क्रेडिट बाजार, श्रम बाजार की स्थितियों, भेदभाव) दोनों प्रकार के कारकों पर निर्भर करता है। इसलिए, अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता पर एक गम्भीर अध्ययन इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से और सावधानी से डिजाइन किए गए सर्वेक्षणों की माँग करता है। भारतीय सन्दर्भ इसके लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है क्योंकि (जैसा कि प्रचलित है) भारत व्यावसायिक, जनसांख्यिकीय, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक रूप से काफी विविध है। भारत में गरीबी, असमानता, रोजगार/बेरोजगारी और जीवन दशाओं (उदाहरण, आवास) से सम्बन्धित मुद्दों पर काम कर रहे शोधकर्ताओं के द्वारा सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले सर्वेक्षण, वे सर्वेक्षण हैं जिन्हें राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) द्वारा आयोजित किया जाता है। मासिक उपभोग व्यय और रोजगार/बेरोजगारी पर किए जाने वाले इसके सर्वेक्षण विशेष रूप से

महत्त्वपूर्ण हैं, जिनके कुछ फायदे हैं। ये बड़े पैमाने पर किए गए राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व वाले सर्वेक्षण हैं, जो काफी प्रचलित हैं। हालाँकि ये पार-अनुभागीय या क्रॉस सेक्शनल (पैनल नहीं) सर्वेक्षण हैं, क्योंकि ये नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, इसलिए वे समय के साथ परिणामों की तुलनात्मकता की कुछ अनुमति देते हैं।[11] पर ये सर्वेक्षण अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता के अध्ययन के उद्देश्य से निर्मित नहीं किए जाते हैं और इसलिए इनके डेटा को इस उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने पर कुछ विशेष कमियों का सामना करना पड़ता है।

सबसे पहले, एन.एस.एस.के जरिए, एक व्यक्ति और उसके घर के मुखिया से उसके सम्बन्ध का डेटा हमारे पास उपलब्ध होता है। जानकारी के इन दो टुकड़ों का उपयोग करके, हम एक व्यक्ति के व्यवसाय को उसके माता-पिता के व्यवसाय के सन्दर्भ में देखने का प्रयास कर सकते हैं। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि यह केवल तभी किया जा सकता है जब व्यक्ति और उसके माता-पिता, दोनों एक ही घर में रहते हैं। इसका मतलब यह होगा कि एक सदस्यीय परिवार, दो सदस्यीय परिवार (पति और पत्नी) और एकल परिवार (पति, पत्नी और छोटे बच्चे) विश्लेषण के दायरे से बाहर हो जाएँगे। इसके अलावा, घर के मुखिया (बच्चों के रूप में) इस विश्लेषण में तभी शामिल किए जाएँगे, जब वे एक घर में अपने माता-पिता के साथ ही रहते हों और माता-पिता को घर के मुखिया के रूप में नहीं गिना गया हो। इस विश्लेषण के दायरे से बाहर हो गए परिवारों में जिस सीमा तक कुछ भौगोलिक क्षेत्रों या सामाजिक-आर्थिक समूहों की ज्यादा हिस्सेदारी हो सकती है (उदाहरण के लिए, शहरी मध्यम वर्ग और अभिजात वर्ग, जो एकल परिवारों में रहने की अधिक सम्भावना रखते हैं), उस सीमा तक विश्लेषण में उनका प्रतिनिधित्व व्यवस्थित ढंग से कम हो सकता है। इसी तरह, जो क्षेत्र या समूह विश्लेषण से कम बाहर होंगे, वे व्यवस्थित रूप से अधिक प्रतिनिधित्व पा सकते हैं। दूसरा, गतिशीलता के अध्ययन में जो एक बात प्रासंगिक है, विशेष रूप से अवसर की असमानता (अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा) के परिप्रेक्ष्य से, वह यह है कि पिछली पीढ़ी के द्वारा आमतौर पर किया जाने वाला व्यवसाय/जीवन भर किया जाने वाला व्यवसाय। एन.एस.एस. में पिछली पीढ़ी के *वर्तमान* व्यवसाय का डेटा मिलता है। जिस सीमा तक वर्तमान व्यवसाय, आमतौर पर किए गए व्यवसाय से अलग होगा (प्रवास, संक्रमणकालीन चुनौतियों, पदोन्नति, सेवानिवृत्ति, आदि), यह एक समस्या पैदा करेगा। यही वजह है कि अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता का अध्ययन करने के उद्देश्य से सावधानीपूर्वक

डिजाइन किए गए सर्वेक्षणों में माता-पिता के रोजगार इतिहास (उदाहरण के लिए Björklund and Jantti, 2000 देखें) पर डेटा एकत्रित किया जाता है।

उपर्युक्त विचारणीय मुद्दों के चलते आने वाले पूर्वाग्रह की सीमा को हम नहीं जानते हैं, लेकिन हमें विश्वास है कि ये कमियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसा विशेष रूप से तब है जब कोई एन.एस.एस. के कई चरणों का उपयोग कर रहा है, क्योंकि हम नहीं जानते कि यह पूर्वाग्रह समय के साथ बढ़ रहा, घट रहा या स्थिर हो रहा है। जनगणना, जिसका जनसांख्यिकीय मामलों का अनुमान में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, बताती है कि उपर्युक्त विचार महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं :

(अ) 2001 में भारत में एक बड़े अनुपात (लगभग 43%) में परिवार छोटे परिवार (चार सदस्य या उससे कम) थे और यह अनुपात 1981 (लगभग 40%) की तुलना में बढ़ गया था,[12] (ब) 1981 से 2001 के दौरान औसत परिवार के आकार में ग्रामीण क्षेत्रों में (5.6 से 5.4), शहरी क्षेत्रों में (5.4 से 5.1) और अखिल भारतीय स्तर पर (5.5 से 5.3) की कमी आई थी, यह एक ऐसी घटना है जिसे कई पर्यवेक्षकों (उदाहरण के लिए, जनगणना 2001ए) ने बढ़ती एकल पारिवारिक सामाजिक संरचना, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, के संकेत के रूप में देखा है (स) विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों और भौगोलिक क्षेत्रों के बीच परिवारों के आकार के वितरण और औसत घरेलू आकार, दोनों के सम्बन्ध में भिन्नता मिलती है, उदाहरण के लिए, अखिल भारतीय स्तर पर एस.सी., एस.टी. और समूची आबादी के स्तर पर दो सदस्यीय परिवारों का प्रतिशत क्रमशः 8.2%, 8.8% और 9.1% है (जनगणना 2001 ए); विभिन्न राज्यों के बीच भिन्नता के लिए जनगणना (2001 बी) देखें, और एस.सी., एस.टी. और समूची आबादी के स्तर पर औसत घरेलू आकार के लिए, जनगणना (2001ए) देखें।

अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता के अध्ययन में हम जिस डेटा का उपयोग कर रहे हैं, उसके कुछ विशेष फायदे हैं, हालाँकि इसकी अपनी सीमाएँ भी हैं। यही कारण है कि हम दावा कर रहे हैं कि हमारा अध्ययन डेटा के अन्य स्रोतों (एन.एस.एस. समेत) पर आधारित अध्ययनों का पूरक है। हम दो अतिरिक्त बिन्दुओं पर प्रकाश डालना चाहते हैं। पहला, डेटा संग्रहण के अलग-अलग स्रोतों की अपनी-अपनी कार्यप्रणाली, अपने-अपने फायदे और सीमाएँ होती हैं, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि

एक ही मुद्दे को डेटा के अलग-अलग स्रोतों के उपयोग द्वारा विश्लेषित और परीक्षित किया जाए और उनके निष्कर्षों की तुलना की जाए। दूसरी, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि गतिशीलता (अन्तर-पीढ़ी और वैयक्तिक दोनों) का अध्ययन एक गम्भीर और महत्त्वपूर्ण अभ्यास है, जिसके लिए ऐसे सर्वेक्षणों की आवश्यकता होती है जिन्हें विशेष रूप से डिजाइन और ध्यान से प्रशासित किया जाए। इस सम्बन्ध में, भारत पर काम कर रहे शोधकर्ता इस तरह के सर्वेक्षणों की उपलब्धता की कमी से अत्यन्त बाधित अनुभव करते हैं। हमारी सबसे बेहतर जानकारी में, ऐसा कोई सार्वजनिक रूप से उपलब्ध, विस्तृत और राष्ट्रीय स्तर का (ग्रामीण और शहरी दोनों) प्रतिनिधि सर्वेक्षण नहीं है जो इस उद्देश्य के लिए आदर्श तौर पर उपयुक्त हो। यह हमारी आशा है कि हमारा लेख पिछले अध्ययनों के साथ, ऐसे डेटा के संग्रह के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगा। इस अवसर का उपयोग हम केन्द्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (CSO) (हमारी राय में, वह संगठन जो सबसे बेहतर साधन सम्पन्न है, और भारतीय सन्दर्भ में सबसे अधिक वैधता प्राप्त है) से यह अनुरोध करने के लिए करते हैं कि वह इस मुद्दे पर विशेष सर्वेक्षण आयोजित करे, या कम से कम अपने नियमित सर्वेक्षणों में गतिशीलता पर एक मॉड्यूल जोड़े।

अब हम उस डेटा का वर्णन करेंगे जिसका हम उपयोग कर रहे हैं, यानी आई.एच.डी.एस., जिसके महत्त्वपूर्ण विवरण (सर्वेक्षण की पद्धति समेत) देसाई व अन्य (2010) में प्रस्तुत किए गए हैं; हम यहाँ केवल एक सारांश प्रस्तुत कर रहे हैं। आई.एच.डी.एस. राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व वाला एक सर्वेक्षण है, जिसे मैरीलैंड विश्वविद्यालय के सहयोग से नेशनल काउंसिल फॉर एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च (NCAER) के निर्देशन में नवम्बर 2004 से अक्टूबर 2005 की अवधि के दौरान आयोजित किया गया था। यह सर्वेक्षण अंडमान और निकोबार तथा लक्षद्वीप को छोड़कर भारत के सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में आयोजित किया गया था और 2001 की राष्ट्रीय जनगणना में शामिल 612 जिलों में से 382 जिलों को इसमें शामिल किया गया था। दो चरणों की एक स्तरीकृत प्रतिदर्शन डिजाइन का पालन करते हुए 27,010 ग्रामीण परिवारों (1,503 गाँवों में) और 13,126 शहरी परिवारों (971 शहरी ब्लॉक में) को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया था।

आई.एच.डी.एस. इस अर्थ में विशिष्ट है कि इसे शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, आर्थिक हैसियत, विवाह, प्रजनन, जेंडर सम्बन्धों और सामाजिक पूँजी पर विभिन्न मॉड्यूलों के माध्यम से मानव

विकास के विभिन्न आयामों को मापने के लिए डिजाइन किया गया था। इस लेख के उद्देश्य के लिए जो सबसे प्रासंगिक जानकारी है वह है, माता-पिता के व्यवसाय की जानकारी। प्रत्येक व्यक्ति जो घर का मुखिया है, उसके सम्बन्ध में सर्वेक्षण यह ब्यौरा देता है कि उसके पिता *अपने जीवन के अधिकांश काल के दौरान* किस व्यवसाय (उदाहरण, किसान, कृषि मजदूर, वैज्ञानिक, ग्रामीण सरकारी कर्मचारी) में थे। ऐसे व्यक्ति जो अपने घर के मुखिया नहीं हैं, हम उनके पिता के व्यवसाय की जानकारी एक अप्रत्यक्ष तरीके से प्राप्त कर सकते हैं। सर्वेक्षण प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह जानकारी देता है कि घर के मुखिया से उसका क्या रिश्ता है, इस प्रकार वे व्यक्ति जो घर के मुखिया का बेटा या बेटी हैं, उनके पिता का व्यवसाय कुछ और नहीं बल्कि घर के मुखिया का व्यवसाय ही है।

दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह सर्वेक्षण विवाहित महिलाओं, जो महिलाओं की बड़ी संख्या है, के सम्बन्ध में उनके पिता के व्यवसाय की कोई जानकारी नहीं देता है। जैसा कि प्रचलित है, भारत में, विवाहित महिलाएँ या तो एकल परिवारों में या संयुक्त परिवारों में, अपने पति और पति के माता-पिता के साथ रहती हैं, जिसका अर्थ यह है कि उनके सन्दर्भ में अप्रत्यक्ष विधि का उपयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि वे घर की मुखिया की या तो पत्नी या बहू हैं। इसके अलावा, वे महिलाएँ जो अपने परिवार की मुखिया हैं, उनके सम्बन्ध मे सर्वेक्षण उनके पिता के व्यवसाय के स्थान पर उनके पति के व्यवसाय का विवरण देता है। यह सर्वेक्षण हमें अनेक वयस्कों की माँ के व्यवसाय की कोई जानकारी नहीं देता है। इसके अलावा, माता-पिता की आय या परिसम्पत्तियों (उदाहरण के लिए, भूमि) की कोई ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध नहीं कराता है जिसके चलते हम वर्गीय स्थिति (उदाहरण के लिए, बड़े किसान, छोटे किसान, आदि) या हैसियत/प्रतिष्ठा-समूहों (उदाहरण के लिए, शिक्षा, आय और व्यवसाय के संयोजन से) की विस्तृत समझ विकसित नहीं कर सकते और न ही इनका उपयोग करके गतिशीलता का विश्लेषण कर सकते हैं। इन सीमाओं के बावजूद, जैसा कि हम नीचे प्रदर्शित करेंगे, हम भारत में अन्तर-पीढ़ी व्यावसायिक गतिशीलता पर सार्थक और अन्तर्दृष्टिपूर्ण निष्कर्षों को विकसित कर सकते हैं। इसके अलावा, उपर्युक्त सीमाओं में से कुछ काफी आम हैं, अन्तर-पीढ़ी गतिशीलता पर किए गए कई अध्ययनों (उदाहरण, उन्हें देखें जो हमने ऊपर उद्धृत किए हैं) में महिलाओं पर डेटा की कमी है और उन्होंने खुद को पुरुषों (उदाहरण, बेटों और पिता) तक सीमित रखा है।

उपर्युक्त को देखते हुए, हम इस लेख में वयस्क पुरुषों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे और उनके व्यवसाय की तुलना उनके पिता के व्यवसाय के साथ करेंगे।[13] हम 20 से 65 वर्ष के आयु वर्ग पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। हम व्यक्तियों (बेटों) के लिए, हम जानते हैं कि वे दूसरों के लिए, अपने घरेलू खेत पर और अपने घरेलू व्यवसाय में (या व्यवसायों में) कितने दिन और हर दिन कितने घंटे काम करते हैं, और यदि ऐसा है तो काम की प्रकृति (उदाहरण के लिए, कृषि मजदूर, शिक्षक) क्या है। हमने इस जानकारी का उपयोग व्यवसायों के समूह बनाने, व्यक्तियों को वर्गीकृत करने और अन्तर-पीढ़ी संचरण को समझने के लिए किया है। अगले खण्ड में इस विश्लेषण का अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है।

विश्लेषण और परिणाम[14]

हम सबसे पहले ग्रामीण इलाकों में रहने वाले व्यक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे और उन्हें विभिन्न व्यावसायिक श्रेणियों में वर्गीकृत करेंगे। इस वर्गीकरण पर पहुँचने के लिए, हमारा प्रयास व्यक्तियों को विभिन्न व्यापक सामाजिक वर्गों या हैसियत समूहों में व्यवस्थित करने के साथ ही उनके कार्यों की प्रकृति के प्रति जागरूक रहना भी है। हमने व्यक्तियों को किसान (अर्थात, कृषि में स्वयं नियोजित, जो मुख्य रूप से घरेलू खेत पर काम करते हैं); गैर-कृषि कार्यों में स्वयं नियोजित (जो मुख्य रूप से घरेलू व्यवसाय पर काम करते हैं) और मजदूर (जो मुख्य रूप से दूसरों के लिए काम करते हैं) के रूप में वर्गीकृत किया है।[15] मजदूरों में एक महत्त्वपूर्ण श्रेणी कृषि मजदूर है, इसलिए हमने मजदूरों को कृषि मजदूरों और अन्य मजदूरों में वर्गीकृत किया है। अन्य मजदूरों की ठीक-ठाक संख्या को देखते हुए, हमने उन्हें व्यवसायों के भारतीय राष्ट्रीय वर्गीकरण (NCO, 2004) का उपयोग करके अन्य श्रेणियों में भी वर्गीकृत किया।

एन.सी.ओ. अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा अपनाई गई एक वर्गीकरण योजना पर आधारित है, जिसे भारतीय स्थितियों के अनुसार उचित रूप से संशोधित किया गया है। यह श्रमिकों को, चार अंकों के कोडों से लेकर 10 एकल अंकों के कोडों के सबसे व्यापक वर्गीकरण के द्वारा,

विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करता है (1) विधायक, वरिष्ठ अधिकारी और प्रबन्धक; (2) पेशेवर; (3) तकनीशियन और सहायक पेशेवर; (4) क्लर्क; (5) सेवा श्रमिक और दुकान व बाजार में बिक्री श्रमिक; (6) कुशल कृषि और मत्स्य श्रमिक; (7) शिल्प और सम्बन्धित व्यापार के श्रमिक; (8) संयन्त्र और मशीन संचालक और संयोजनकर्ता (assembler); (9) प्राथमिक व्यवसाय (उदाहरण, सफाई कर्मचारी, सड़क पर सामान बेचने वाले विक्रेता, बोझ चढ़ाने/उतारनेवाले मजदूर, आदि); और (10) श्रमिक जिन्हें व्यवसायों के द्वारा वर्गीकृत नहीं किया गया है। ध्यान दें कि यह योजना श्रमिकों को उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों की समरूपता के आधार पर वर्गीकृत करने की कोशिश करती है, लेकिन इसकी व्याख्या श्रमिकों को व्यापक कौशल या हैसियत समूहों में व्यवस्थित करने वाली योजना रूप में भी की जा सकती है, उदाहरण के लिए, पेशेवर, सहयोगी पेशेवरों की तुलना में उच्च हैसियत रखते हैं और सहयोगी पेशेवर, अकुशल श्रमिकों की तुलना में उच्च हैसियत रखते हैं। हम इन सभी 10 श्रेणियों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन इससे बहुत से समूह बन जाएँगे, जिससे ऐसा हो सकता कि केवल कुछ ही मामलों में अन्तर-पीढ़ी संक्रमण दिखे, मतलब संक्रमण आव्यूहों (नीचे चर्चा की गई) में कई श्रेणियों में शून्य प्रविष्टियाँ हो सकती हैं। इसलिए, काम को सरल बनाने के लिए, हमने श्रमिकों को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है : (अ) पेशेवरों, अधिकारियों और तकनीशियनों; (ब) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्य श्रमिक; (स) शिल्प, व्यापार, संयन्त्र और मशीन संचालक; और (द) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।[16] पिता के व्यवसाय के लिए, हम वर्णन किए गए तरीके से एन.सी.ओ. कोड का उपयोग करके, उपरोक्त के समान वर्गीकरण का उपयोग कर सकते हैं।

गतिशीलता पर उपलब्ध साहित्य में वर्गीकरण की योजनाओं पर कोई सहमति मौजूद नहीं है, यहाँ तक कि एक ही देश के अध्ययन में भिन्न-भिन्न लेखकों ने भिन्न-भिन्न योजनाओं का उपयोग किया है (उदाहरण, Long and Ferrie 2005; Erikson and Goldthorpe 1992)। हमारी योजना मौजूदा योजनाओं (उदाहरण, Erikson and Goldthorpe1992) के साथ कुछ श्रेणियाँ (उदाहरण, किसान और कृषि मजदूर) साझा करती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारी योजना भारत में गतिशीलता पर मौजूदा सैद्धान्तिक रूप से मजबूत योजनाओं (Vakulabharanam 2010) के साथ भी कुछ समानताएँ साझा करती है।[17] यहाँ ध्यान देने योग्य एक अन्य बात यह है कि हालाँकि हमारी योजना में पदानुक्रम के लक्षण हैं[18], पर सभी श्रेणियों को स्पष्ट दर्जे में रखना कठिन है,

उदाहरण के लिए, कृषक और गैर-कृषि कार्यों में स्व-नियोजित व्यक्ति, कृषक और क्लर्क। हम सुरक्षित रूप से यह कह सकते हैं कि कृषि मजदूरों और प्राथमिक व्यवसायों में शामिल लोग सबसे निचले दर्जे पर आएँगे क्योंकि कृषि या गैर-कृषि व्यवसायों पर विचार करने पर वह सबसे नीचे आते हैं।

अगर हम किसानों को भूमि आकार (जैसे बड़े, मध्यम, आदि) के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर सकें तो यह उपयोगी होगा। लेकिन, दुर्भाग्यवश यह सम्भव नहीं है क्योंकि (जैसा कि हमने ऊपर चर्चा की है) कई पिताओं के पास उपलब्ध भूमि के आकार की जानकारी हमारे पास नहीं है। इस जानकारी की कमी के सम्बन्ध में आई.एच.डी.एस. कोई अकेला नहीं है बल्कि ऐसी जानकारी अन्य सर्वेक्षणों में भी उपलब्ध नहीं है, यहाँ तक कि विकसित देशों (उदाहरण, गिब्बन 2010) के अध्ययनों में भी नहीं है। इसके अलावा, एन.एस.एस. डेटा इस सम्बन्ध में भ्रामक होगा क्योंकि जो पिता और पुत्र एक ही घर में रहते हैं, वे सभी मिलकर एक ही जमीन के मालिक होंगे। तालिका 1 ग्रामीण, शहरी और अखिल भारतीय स्तर पर इन विभिन्न श्रेणियों में शामिल आबादी के अनुपात को प्रस्तुत करती है।

जैसा कि अपेक्षित है, हम देख सकते हैं कि ग्रामीण इलाकों (स्तम्भ (iv)) में व्यक्तियों (बेटों) का एक बड़ा अनुपात (58.3%) या तो किसान (32.7%) या कृषि मजदूर (25.6%) हैं। अखिल भारतीय स्तर (कॉलम (ii)) के लिए यही आँकड़ा 44.3% है।

तालिका 1: व्यावसायिक श्रेणियों के अनुसार व्यक्तियों का वितरण (प्रतिशत) : अखिल भारतीय, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में

	अखिल भारतीय		ग्रामीण		शहरी	
	पिता (i)	बेटे (ii)	पिता (iii)	बेटे (iv)	पिता (v)	बेटे (vi)
किसान (1)	47.19	24.45	55.19	32.70	25.62	2.16
गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित (2)	3.79	14.47	1.75	10.88	9.29	24.15
कृषि मजदूर (3)	22.57	19.83	25.87	25.64	13.66	4.15

पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित (4)	6.22	6.01	3.93	3.46	12.42	12.88
क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित (5)	6.42	8.33	3.47	4.56	14.36	18.50
शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित (6)	7.62	8.83	5.31	5.56	13.86	17.64
प्राथमिक व्यवसाय और अन्य (7)	6.18	18.10	4.47	17.20	10.79	20.53

ग्रामीण, शहरी और अखिल भारतीय स्तर पर व्यक्तियों की संख्या क्रमशः 18,679, 9,591 और 28,270 है।

स्रोत : आईएचडीएस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

तालिका 1, ग्रामीण, शहरी और अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न व्यावसायिक श्रेणियों से सम्बन्ध रखने वाले पिताओं के अनुपात को भी प्रदर्शित करती है। उदाहरण के लिए, हम देख सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में 81.1% पिता या तो किसान या कृषि मजदूर हैं (क्रमशः 55.2% और 25.9%)।

तालिका 2 एक 'संक्रमण' या 'गतिशीलता' आव्यूह प्रस्तुत करती है जो पिता की व्यावसायिक श्रेणी के सापेक्ष विभिन्न व्यावसायिक श्रेणियों में बेटों की संलग्नता का प्रतिशत प्रदर्शित कर रही है। जैसा कि इस विषय पर उपलब्ध साहित्य में मानक है, इन प्रतिशतों की सशर्त प्रायिकताओं के रूप में व्याख्या की जा सकती है, अर्थात, अपने पिता की श्रेणी के सम्बन्ध में एक व्यक्ति की खास श्रेणी में पहुँचने की प्रायिकता क्या है।[19] ध्यान दें कि प्रत्येक पंक्ति में प्रविष्टियाँ एक विशेष दिशा में संकेत दे रही हैं।

तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि पीढ़ियों में व्यवसायों के सम्बन्ध में काफी निरन्तरता है। एक श्रेणी (पेशेवर, अधिकारियों और तकनीशियनों) को छोड़कर सभी व्यावसायिक श्रेणियों में, विकर्ण (तिरछी) प्रविष्टियाँ सबसे अधिक हैं। यहाँ तक कि इस (पेशेवर, आदि) मामले में भी विकर्ण प्रविष्टि दूसरी सबसे बड़ी प्रविष्टि है और सबसे बड़ी प्रविष्टि के काफी निकट है। यह प्रदर्शित करता है कि एक व्यक्ति के लिए, सभी व्यवसायों में से, पिता का व्यवसाय करने की सम्भावना

सबसे अधिक है। किसानों और कृषि मजदूरों की दो श्रेणियाँ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। किसानों के बच्चों की कुल आबादी के लगभग आधे बच्चे अन्ततःकिसान बनते हैं और कृषि मजदूरों के आधे से अधिक बच्चे (लगभग 56%) अन्ततःकृषि मजदूरों के रूप में आजीवका प्राप्त करते हैं।

तालिका 2 : व्यावसायिक संक्रमण आव्यूह, ग्रामीण भारत

पिताओं की व्यावसायिक श्रेणियाँ	बेटों की व्यावसायिक श्रेणियाँ (प्रतिशत)						
	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
(1)	49.52	8.55	16.85	3.36	3.95	3.22	14.55
(2)	9.76	62.4	7.00	3.51	4.24	4.29	8.80
(3)	10.44	5.95	55.87	1.51	2.69	4.12	19.43
(4)	26.55	17.49	10.25	18.19	10.25	7.15	10.13
(5)	15.62	18.93	11.00	6.64	21.27	6.84	19.7
(6)	10.64	23.94	8.07	2.75	5.35	35.27	13.98
(7)	7.93	20.46	12.36	1.25	4.05	5.64	48.31

(1) किसान; (2) गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित; (3) कृषि मजदूर; (4) पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित; (5) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित; (6) शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित; (7) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।

स्रोत: आई.एच.डी.एस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

अब हम शहरी क्षेत्रों के विश्लेषण की ओर रुख करेंगे। तालिका 1 (कॉलम (v) और (vi)) से, हम देख सकते हैं कि (जैसा अपेक्षित है) व्यक्तियों का एक छोटा प्रतिशत कृषि (किसान या मजदूर) में संलग्न है। कृषि में शामिल पिताओं का प्रतिशत दो कारकों के चलते कुछ हद तक (बेटों के इसी प्रतिशत की तुलना में) अधिक है : पहला, सामान्य तौर पर कृषि, विशेष रूप से शहरी कृषि में समय के साथ गिरावट और दूसरा, ग्रामीण-शहरी प्रवास– इनमें से कुछ पिता ग्रामीण इलाकों में किसान/मजदूर थे, जबकि उनके बेटे शहरी इलाकों में रह रहे हैं, जहाँ कृषि की भूमिका कम है।

तालिका 3 (पृष्ठ 61) शहरी क्षेत्रों के लिए गतिशीलता आव्यूह को प्रस्तुत करती है। जैसा कि हम तालिका से देख सकते हैं, शहरी क्षेत्रों में भी पीढ़ियों में व्यवसाय के सम्बन्ध में काफी निरन्तरता है। अगर हम किसानों की श्रेणी को अनदेखा करते हैं (जैसा ऊपर वर्णित है कि उनकी संख्या कम

है), तो यहाँ भी विकर्ण प्रविष्टियाँ सबसे अधिक हैं। यहाँ यह इंगित करने लायक है कि प्राथमिक व्यवसायों में शामिल पिताओं के लगभग आधे (47.2%) बेटे अन्ततः इसी श्रेणी में व्यवसाय प्राप्त करते हैं और कृषि मजदूरों के आधे से अधिक बच्चे (54.4%) अन्ततःकृषि मजदूरी या प्राथमिक व्यवसायों में पहुँचते हैं।

हमने ऊपर ग्रामीण-शहरी प्रवास की जो चर्चा की है उसे देखते हुए, गतिशीलता का अखिल भारतीय स्तर पर अध्ययन करना सर्वोत्तम होगा। तालिका 4 अखिल भारतीय संक्रमण आव्यूह प्रस्तुत करती है। सभी श्रेणियों में विकर्ण प्रविष्टियाँ सबसे बड़ी हैं। कुछ परिणाम ध्यान देने योग्य हैं : कृषि मजदूरों के आधे से ज्यादा बेटे कृषि मजदूरों के रूप में रहते हैं; प्राथमिक व्यवसायों में शामिल व्यक्तियों के लगभग 48% बेटे प्राथमिक व्यवसायों में रहते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यावसायिक पदानुक्रम में सबसे नीचे पड़ी श्रेणियों में सबसे कम गतिशीलता दिखती है।

तालिका 3 : व्यावसायिक संक्रमण आव्यूह, शहरी भारत

पिताओं की	बेटों की व्यावसायिक श्रेणियाँ (प्रतिशत)						
व्यावसायिक श्रेणियाँ	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
(1)	6.78	19.52	2.52	15.06	20.50	16.99	18.62
(2)	0.30	59.60	0.40	10.16	14.85	7.99	6.71
(3)	1.13	11.12	22.05	5.75	13.38	14.27	32.31
(4)	0.53	21.72	0.77	31.56	22.46	11.95	11.02
(5)	0.91	22.19	0.56	14.15	30.74	15.72	15.74
(6)	0.08	26.85	1.06	6.14	12.39	39.03	14.45
(7)	0.28	23.00	1.21	4.58	10.36	13.36	47.21

(1) किसान; (2) गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित; (3) कृषि मजदूर; (4) पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित; (5) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित; (6) शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित; (7) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।

स्रोत: आई.एच.डी.एस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

इन प्रवृत्तियों के पीछे क्या कारण हैं? सबसे पहले, जैसा कि व्यावसायिक चयन और सम्पत्ति प्राप्त करने में अवरोध (Banerjee and Newman1993; Bardhan et al 2000 और इसमें दिए गए

सन्दर्भ) पर उपलब्ध साहित्य में सुझाव दिया गया है, वित्तीय बाजारों की कमियाँ और सम्पत्ति /जमानती सम्पत्ति की कमी गरीबों को बेहतर व्यवसायों में जाने से रोकती है।

तालिका 4 : व्यावसायिक संक्रमण आव्यूह, अखिल भारतीय स्तर

पिताओं की व्यावसायिक श्रेणियाँ	बेटों की व्यावसायिक श्रेणियाँ (प्रतिशत)						
	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
(1)	43.25	10.16	14.75	5.08	6.38	5.24	15.14
(2)	3.49	60.54	2.63	7.92	11.27	6.74	7.41
(3)	8.91	6.79	50.33	2.21	4.44	5.78	21.54
(4)	12.51	19.77	5.14	25.4	16.83	9.74	10.61
(5)	6.72	20.90	4.68	11.18	27.00	12.21	17.30
(6)	5.45	25.37	4.63	4.42	8.81	37.11	14.21
(7)	4.32	21.66	7.10	2.82	7.03	9.28	47.79

(1) किसान; (2) गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित; (3) कृषि मजदूर; (4) पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित; (5) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित; (6) शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित; (7) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।

स्रोत: आई.एच.डी.एस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

दूसरा, उर्ध्वमुखी गतिशीलता (ऊपर के व्यवसायों में जाने का) का एक प्रमुख मार्ग शिक्षा है। अब तक इस सम्बन्ध में तर्कपूर्ण ढंग से काफी दस्तावेजीकरण (उदाहरण, Dreze and Sen2002; Motiram and Osberg 2011; The Probe Team 1999) हो चुका है कि भारत में सार्वजनिक शिक्षा की गुणवत्ता काफी खराब है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों की अत्यधिक अनुपस्थिति के साथ यह बहुत बदहाल है। निजी शिक्षा अत्यधिक महँगी है और जनसंख्या के गरीब तबकों की पहुँच से काफी दूर है। यह गतिशीलता को कम करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक हो सकता है। तीसरा, अ-गतिशीलता में योगदान देने वाला एक प्रमुख कारक समकक्षीय विवाह (assortative mating) (Weil 2009), अर्थात, समान सामाजिक-आर्थिक हैसियत या पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के बीच विवाह है। इस तर्क के सम्बन्ध में पर्याप्त साक्ष्य (उदाहरण, Munshi and Rosenzweig 2009) मौजूद है कि भारत में समकक्षीय विवाह की दर उच्च है, खासकर इसलिए क्योंकि यहाँ विवाह की मध्यस्थता जाति और धार्मिक नेटवर्कों के माध्यम से होती है।

गतिशीलता पर जाति के प्रभाव, भारतीय सन्दर्भ में एक काफी रुचिकर मुद्दा है। इसलिए हमने 'अनुसूचित समूहों' (एस.सी. और एस.टी.) और 'गैर अनुसूचित समूहों' (गैर अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति) की गतिशीलता को अलग-अलग देखा है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और गैर-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए संक्रमण आव्यूह क्रमशः सारणी 5 और 6 में प्रस्तुत किए गए हैं। हम आसानी से (विकर्ण में प्रविष्टियों से) यह देख सकते हैं कि दोनों ही मामलों में काफी निरन्तरता है। हालाँकि, कुछ अन्तर ध्यान देने योग्य हैं। गैर-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के मुकाबले अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की उच्च-स्तरीय व्यवसायों में निरन्तरता कम है; उदाहरण के लिए, पेशेवरों की श्रेणी के लिए दोनों के बीच अन्तर 4.4 प्रतिशत का है। इसके विपरीत, व्यावसायिक पदानुक्रम में सबसे नीचे स्थित व्यवसायों (जैसे कृषि मजदूरों और प्राथमिक व्यवसायों) में गैर-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजातियों की तुलना में एस.सी./एस.टी. की सततता बहुत अधिक है;[20] उदाहरण के लिए, कृषि मजदूरों की श्रेणी के लिए 14.4 प्रतिशत का अन्तर यही इंगित करता है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दा जो भारतीय सन्दर्भ में रुचिकर हो सकता है (और जिस पर विकसित देशों में ध्यान दिया गया है) वह है 'निम्नवर्ती गतिशीलता'– अन्तर-पीढ़ी (अन्तर्वैयक्तिक) परिप्रेक्ष्य में यह बेटों (व्यक्तियों) का उनके पिता (उनके अतीत) की तुलना में निम्न सामाजिक-आर्थिक हैसियत की ओर संक्रमण को प्रदर्शित करता है। विकसित देशों, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमरीका और यूनाइटेड किंगडम में काफी निम्नवर्ती गतिशीलता का दस्तावेजीकरण किया गया है और यह तर्क दिया गया है कि इन देशों में निम्नवर्ती गतिशीलता बढ़ रही है (Acs 2011; Giddens 2009: 466)। यह भी पाया गया है कि वैवाहिक स्थिति, लिंग और नस्ल निम्नवर्ती गतिशीलता पर प्रभाव डालने वाले महत्त्वपूर्ण कारक हैं, उदाहरण के लिए श्वेत पुरुषों की तुलना में अश्वेत पुरुषों के निम्नवर्ती गतिशील होने की अधिक सम्भावना है (Acs, 2011)।

<u>तालिका 5 : व्यावसायिक संक्रमण आव्यूह, एस.सी./एस.टी. व्यक्ति, अखिल भारतीय स्तर</u>

पिताओं की व्यावसायिक श्रेणियाँ	बेटों की व्यावसायिक श्रेणियाँ (प्रतिशत)						
	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
(1)	36.31	6.92	21.76	3.96	5.49	4.77	20.79
(2)	1.10	56.85	4.30	7.81	9.33	7.33	13.28

(3)	7.06	3.70	57.25	1.92	3.11	4.83	22.13
(4)	9.09	10.8	13.14	21.73	15.72	9.71	19.82
(5)	4.54	13.79	9.00	6.25	27.56	11.92	26.95
(6)	3.81	20.02	8.84	5.07	8.86	27.76	25.64
(7)	3.68	14.18	7.73	3.12	6.17	9.65	55.47

I. (1) किसान; (2) गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित; (3) कृषि मजदूर; (4) पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित; (5) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित; (6) शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित; (7) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।

II.एस.सी./एस.टी– अनुसूचित जातियाँ और अनुसूची जनजातियाँ।

III. व्यवसायों (1)-(7) में शामिल गैर-एससी/एसटी (बेटों) के प्रतिशत क्रमश: 18.38, 7.94, 32.52, 3.95, 6.18, 6.94 और 24.08 हैं।

स्रोत: आईएचडीएस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

<u>तालिका 6 : व्यावसायिक संक्रमण आव्यूह, गैर- एस.सी./एस.टी. व्यक्ति, अखिल भारतीय स्तर</u>

पिताओं की व्यावसायिक श्रेणियाँ	बेटों की व्यावसायिक श्रेणियाँ (प्रतिशत)						
	(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
(1)	45.74	11.32	12.23	5.48	6.7	5.41	13.12
(2)	3.74	60.92	2.45	7.93	11.47	6.68	6.81
(3)	10.91	10.13	42.87	2.51	5.87	6.81	20.9
(4)	13.22	21.63	3.48	26.16	17.06	9.74	8.70
(5)	7.29	22.77	3.54	12.48	26.86	12.29	14.77
(6)	5.94	26.96	3.37	4.22	8.8	39.89	10.82
(7)	4.65	25.50	6.78	2.67	7.47	9.09	43.85

I. (1) किसान; (2) गैर-कृषि रोजगार में स्व-नियोजित; (3) कृषि मजदूर; (4) पेशेवर, अधिकारी और सम्बन्धित; (5) क्लर्क, सेवा कर्मचारी, कुशल कृषि और मत्स्यपालन कार्यकर्ता और सम्बन्धित; (6) शिल्पकार, संयन्त्र ऑपरेटर और सम्बन्धित; (7) प्राथमिक व्यवसाय और अन्य।

II.एस.सी./एस.टी– अनुसूचित जातियाँ और अनुसूची जनजातियाँ।

III. व्यवसायों (1)-(7) में शामिल गैर-एससी/एसटी (बेटों) के प्रतिशत क्रमश: 27.14, 17.37, 14.19, 6.92, 9.28, 9.66, और 15.44 हैं।

स्रोत: आईएचडीएस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, हम अनुसूचित जातियों / अनुसूचित जनजातियों और गैर-अनुसूचित जातियों/ जनजातियों दोनों ही के लिए बेटों के उस प्रतिशत का परीक्षण करते हैं जो 'फिसलकर' कृषि श्रम या प्राथमिक व्यवसायों में शामिल हो जाते हैं। हम तालिका 5 और 6 में स्तम्भों (3) तथा (7) की तुलना करके देख सकते हैं कि अनुसूचित जातियों/ जनजातियों के लिए

पिताओं की प्रत्येक व्यवसायिक श्रेणी से, पर्याप्त एवं काफी अधिक (गैर-अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की तुलना में) बेटों का प्रतिशत कृषि श्रम या प्राथमिक व्यवसायों में शामिल हो जाता है। एक रोचक मामला किसानों का है जिनके पुत्र कृषि श्रमिक बन जाते हैं (यह दुर्घटनाओं के कारण हो सकता है– जैसे फसल का नुक्सान या परिवार में बीमारी)– गैर-अनुसूचित जातियों/ जनजातियों की तुलना में अनुसूचित जातियों/ जनजातियों में कृषक से कृषि श्रमिक के इस अन्तर-पीढ़ी संक्रमण की सम्भावना 9.5 प्रतिशत ज्यादा होती है। अनुसूचित जाति/ जनजाति कृषकों के पुत्रों के प्राथमिक व्यवसायों में शामिल होने की सम्भावना भी 7.7 प्रतिशत अधिक बनती है।

अब तक चर्चा में, हम निष्कर्ष निकालने के लिए संक्रमण आव्यूहों की विकर्ण प्रविष्टियों पर निर्भर थे, साथ ही अनौपचारिक रूप से निरन्तरता की धारणा पर भी निर्भर रहे। हम प्रतिदर्श को दो समूहों में बाँटकर इसे और ठीक से देख सकते हैं– एक वे जो अपने पिता के व्यवसाय में ही हैं और वे जो पिता से इतर अन्य व्यवसाय में हैं। फिर हम इस सम्भाव्यता का प्रतिगमन कर सकते हैं कि एक पुत्र विभिन्न प्रासंगिक व्याख्यात्मक चरों (जैसे, अपनी शिक्षा, घरेलू आकार, जाति, इत्यादि), पिता के व्यवसाय एवं पिता की शिक्षा के आधार पर अलग व्यवसाय में होगा। हालाँकि, डेटा सीमाओं (केवल आई.एच.डी.एस. डेटा के साथ ही नहीं, बल्कि वह डेटा भी जिसमें ऐतिहासिक सूचना नहीं होती है, जैसे, एन.एस.एस.) के चलते ऐसे 'स्विचिंग' प्रतिगमन को लागू करने में अध्ययनकर्ता को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। संक्षेप में कहा जाए तो समस्याएँ और सीमाएँ प्रासंगिक चरों के लिए अपर्याप्त[21] या भ्रामक[22] प्रतिनिधियों (proxies) के कारण आती हैं। जैसे कि कई प्रतिगमनों में, व्याख्यात्मक चरों की सम्भाव्य अन्तर्जातीयता और लुप्त चर पूर्वाग्रह भी होते हैं। और यह प्रतिगमन बेटों के व्यवसाय जो पिता के व्यवसाय के 'करीब' हैं और पिता के व्यवसाय से 'अलग' हैं, इन दोनों के बीच अन्तर कर पाने में अक्षम होगा। इसके अलावा, हालाँकि गतिशीलता को समझने में निरन्तरता की ओर सहज आकर्षण होता है, पर यह प्रासंगिक मानकों में से केवल एक है, जैसे, गतिशीलता को समझने के लिए कोई 'अभिसरण'/ 'संमिलन' (Geweke et al, 1986) को भी शामिल कर सकता है। गतिशीलता के मापन पर उपलब्ध साहित्य में लेखकों ने कई मानकों पर विचार किया है और इन मानकों पर आधारित गतिशीलता के मापों को विकसित किया है।[23]

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग करने की बजाय हम गतिशीलता को समझने के लिए साहित्य में विकसित मापों का प्रयोग कर रहे हैं, जो उपरोक्त उल्लिखित सीमाओं से ग्रस्त नहीं हैं। चूँकि यह एक विस्तृत और विकासशील साहित्य है, इसलिए इसकी व्यापक समीक्षा वर्तमान लेख की सीमा से परे है। बल्कि, हम आम रूप से प्रयोग में लाए जाने वाले कुछ मापों का एक संक्षिप्त विवरण (विशेषकर Formby et al 2004; Shorrocks 1978; Sommers and Conlisk 1979; Van Da Gaer et al 2000 पर आधारित) प्रस्तुत करते हैं।

मान लीजिए संक्रमण आव्यूह (T) की iवीं पंक्ति और jवें स्तम्भ में p_{ij} (i,j=1,...,m) की प्रविष्टि है, अर्थात यह प्रायिकता है कि पुत्र की व्यावसायिक श्रेणी j है, यदि उसके पिता की व्यावसायिक श्रेणी i है। m व्यावसायिक श्रेणियों की संख्या है।

पहला माप,

$$M_1 = \frac{1}{m}\sum_{i=1}^{m}\sum_{\substack{j=1 \\ i\neq j}}^{m} p_{ij} = (1 - \frac{1}{m}\sum_{i=1}^{m} p_{ii}) \qquad (1)$$

एक बेटे (या बेटों का अपेक्षित अनुपात) के पिता की व्यावसायिक श्रेणी को छोड़ देने की प्रायिकता है। इसे क्रम m के संक्रमण आव्यूह तथा पहचान आव्यूह के बीच सामान्यीकृत दूरी के रूप में भी समझा जा सकता है। ध्यान दीजिए कि पहचान आव्यूह (जो 1 के मुख्य विकर्ण और o के रूप में शेष प्रविष्टियों से मिलकर बना है) पूर्ण गतिहीनता को दिखाता है क्योंकि पिता की व्यावसायिक श्रेणी चाहे जो भी हो, पुत्र उसी श्रेणी (अर्थात, प्रायिकता 1 के साथ) में पड़ता है। इस मापन की यही सीमा है जिसकी हमने पहले ही चर्चा (प्रतिगमन विश्लेषण के सन्दर्भ में) की है– पिता एवं पुत्र के व्यवसायों के बीच 'अन्तर' को ध्यान में रखे बिना यह केवल ये देखता है कि पुत्र पिता के व्यवसाय को छोड़ता है या नहीं। इस सीमा का अगले मापन में ध्यान रखा गया है :

$$M_2 = \frac{1}{m(m-1)} \sum_{i=1}^{m} \sum_{j=1}^{m} P_{ij} \, |i-j| \qquad (2)$$

ध्यान दीजिए कि पिता के व्यवसाय एवं पुत्र के व्यवसाय के बीच कुल m (m-1) संक्रमण सम्भव हैं। साथ ही, पिता के दिए हुए व्यवसाय (i) के लिए भी, पिता एवं पुत्र के व्यवसायों के बीच अपेक्षित अन्तर $\sum_{j=1}^{m} P_{ij} \; |i-j|$ है।[24]

संक्रमण आव्यूह के अभिलक्षणिक मान पर आधारित कई मापन प्रस्तावित किए गए हैं, अभिलक्षणिक मान मार्कोव प्रक्रिया के लिए स्थिर अवस्था तक अभिसरण गति से जुड़ा हुआ है। अभिसरण गति को गतिशीलता का सूचक माना जा सकता है– अभिसरण जितना तीव्र होता है, उतनी ही उच्चतर गतिशीलता होती है।[25] मान लें λ_i (i= 1,...,m) संक्रमण आव्यूह के iवें अभिलक्षणिक मान को गैर-बढ़ते क्रम में सूचित करता है। यहाँ यह बताना महत्त्वपूर्ण है कि सबसे बड़ा अभिलक्षणिक मान 1 है क्योंकि T आव्यूह है जिसकी प्रत्येक पंक्ति में प्रविष्टियाँ 1 तक जुड़ती हैं। अभिलक्षणिक मान पर आधारित एक मापन है :

$$M_3 = 1 - |\lambda_2| \qquad (3)$$

जहाँ $|\lambda_2|$ द्वितीय सबसे बड़े अभिलक्षणिक मान का निरपेक्ष मान है। हम $\lambda_2, \lambda_3, \ldots, \lambda_m$ का औसत भी ले सकते हैं। ज्यामितीय मध्यमान निकालने पर :

$$M_4 = 1 - \left(\left|\prod_{i=2}^{m} \lambda_i\right|\right)^{1/(m-1)} = 1 - (\det(T))^{1/(m-1)} \qquad (4)$$

जहाँ *'det(T)' T* का निर्धारक है। अगर हम अंकगणितीय मध्यमान निकालें तो फिर हमें एक अलग मापन मिलेगा :

$$M_5 = \left(1 - \frac{\sum_{2}^{m} |\lambda_2|}{m-1}\right) = \frac{(m - \mathrm{trace}(T))}{m-1} \qquad (5)$$

ध्यान दीजिए कि हम 1 में से घटा रहे हैं ताकि हम गतिशीलता का माप प्राप्त कर सकें, न कि गतिहीनता का।

तालिका 7 (पृष्ठ 63) में हम ऊपर उल्लिखित गतिशीलता मापनों को ग्रामीण एवं शहरी और साथ ही अखिल भारतीय स्तर के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। चूँकि *M5, M1* के समान है और समान ही

परिणाम (तुलना में) देगा, इसलिए हम इसे छोड़ रहे हैं और पहले चार मापनों के आकलन को ही प्रस्तुत कर रहे हैं। तालिका 7 से हम देख सकते हैं कि उपरोक्त वर्णित सभी मापनों के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में गतिशीलता शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है। यह आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में काफी व्यवसायिक विविधता है।

इसके अलावा, गतिशीलता को बढ़ावा देने वाले कारकों (जैसे, शैक्षणिक अवसरों और क्रेडिट की उपलब्धता; साथ ही जाति या धार्मिक समूहों को कुछ निश्चित व्यवसायों में बाँधकर रखने वाले सामाजिक मानकों का शिथिल होना) के शहरी क्षेत्रों में मजबूत होने की अधिक सम्भावना है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और गैर-अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों में गतिशीलता की तुलना अस्पष्ट है क्योंकि कुछ मापन सुझाते हैं कि गैर-अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के लिए गतिशीलता अधिक है जबकि कुछ अन्य मापन इसके विपरीत सुझाव देते हैं। आगे विचार करने पर, अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति और गैर-अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के लिए संक्रमण आव्यूहों के आधार पर पूर्व चर्चा के प्रकाश में यह सही जान पड़ता है। जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के लिए, अधोमुखी (नीचे जाने वाली) गतिशीलता (अर्थात, कृषि श्रम और प्राथमिक व्यवसायों के लिए) अधिक है और कुछ उच्च स्तरीय व्यवसायों (जैसे, पेशेवर) में निरन्तरता कम है। एक अन्य रुचिकर विषय गरीब राज्यों और अपेक्षाकृत बेहतर राज्यों के बीच अन्तर है। इसलिए हम इन मापनों को ऐसे राज्य-समूहों (बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा) जिन्हें आमतौर पर गरीब और अल्पविकसित माना जाता है और अन्य राज्यों के लिए प्रस्तुत करते हैं– तुलना के परिणाम अस्पष्ट हैं।

तालिका 7: अन्तर-व्यावसायिक श्रेणियों के संक्रमण आव्यूह के लिए गतिशीलता के स्केलर संकेतक

<u>संक्रमण आव्यूह</u>

		M_1	M_2	M_3	M_4
क्षेत्र	ग्रामीण	0.585	0.281	0.506	0.716

	शहरी	0.661	0.304	0.651	0.806
जाति	गैर एस.सी./ एस.टी.	0.591	0.274	0.524	0.715
	एस.सी. /एस. टी.	0.596	0.271	0.455	0.724
राज्य	गरीब राज्य	0.609	0.296	0.462	0.747
	अन्य राज्य	0.572	0.255	0.480	0.692
आयु	20-30 वर्ष	0.624	0.291	0.501	0.783
	31-40	0.613	0.281	0.527	0.746
	41-50	0.587	0.270	0.450	0.713
	51-65	0.547	0.259	0.452	0.661
अखिल भारतीय		0.584	0.270	0.483	0.708

(1) इन मापनों के विवरण के लिए, पृष्ठ 14-15 देखें।

(2) एस.सी. / एस.टी.– अनुसूचित जातियाँ और अनुसूची जनजातियाँ।

(3) गरीब राज्य– बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा।

स्रोत: आई.एच.डी.एस (2004-05) के आधार पर लेखकों द्वारा की गई गणना।

चूँकि हमने आयु-समूह 20-65 वर्ष के पुरुषों को केन्द्र में रखा है, हमारे प्रतिदर्श में बहुत पहले के जन्मे– 1940 से 1980 तक (सर्वेक्षण 2004-05 के लिए है) के लोग शामिल हैं। इसलिए, हम विभिन्न आयु-आधारित जनसंख्या वर्गों में आने वाले बेटों को लेते हैं : 20-30 वर्ष, 40-50 वर्ष, और 50-65 वर्ष (क्रमशः 1970-80, 1960-70, 1950-60 और 1940-50 के दशकों में जन्मे) और प्रत्येक जनसंख्या वर्ग की गतिशीलता को अलग से देखते हैं। जगह की कमी के कारण, हमने इन जनसंख्या वर्गों के लिए संक्रमण आव्यूहों को प्रस्तुत नहीं किया है, किन्तु हमने तालिका 7 में गतिशीलता मापनों को प्रस्तुत किया है। हम देख सकते हैं कि 1970-80 के दशकों में जन्मे लोग, इससे पहले जन्मे लोगों की तुलना में उच्चतर गतिशीलता (गतिशीलता के सभी मापनों के

अनुसार) प्रदर्शित करते हैं, इसी प्रकार के परिणाम 1960-70 में जन्मे लोगों पर भी लागू होते हैं। इसे समय के साथ हुए व्यवसायिक तथा अन्य (अर्थात, क्रेडिट) अवसरों में सामान्य बेहतरी के तौर पर समझा जा सकता है, हालाँकि यह पता लगाना सम्भव नहीं है कि यह प्रक्रिया ठीक-ठीक कब शुरू हुई, अर्थात, परिवर्तन का दौर मुख्य रूप से कब शुरू हुआ। साथ ही, निम्न-स्तरीय व्यवसायों में निरन्तरता में समय के साथ कोई नियमित कमी नहीं दिखाई देती है– इन जनसंख्या वर्गों के लिए प्राथमिक व्यवसायों में शामिल बच्चों का प्रतिशत, जिनके पिता भी प्राथमिक व्यवसायों में शामिल थे, क्रमशः 56%, 51%, 45% और 44% है, कृषि मजदूरों के लिए सम्बद्ध आँकड़े क्रमश 45%, 52%, 51% और 50% हैं।

4 चर्चा और निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन में, हमने भारत में व्यावसायिक गतिशीलता का दस्तावेजीकरण और विश्लेषण करने के लिए आई.एच.डी.एस. डेटा का उपयोग किया है। हमने इस उद्देश्य के लिए संक्रमण आव्यूह और गतिशीलता मापनों दोनों का उपयोग किया है। हमारे निष्कर्ष काफी अ-गतिशीलता की ओर संकेत देते हैं, विशेषकर निम्न-कौशल और निम्न-वेतन वाले व्यवसायों में। हमारे निष्कर्ष यह भी दिखाते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में गतिशीलता शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम है। अनुसूचित जाति/ जनजाति और गैर-अनुसूचित जाति/जनजाति जाति-समूहों की तुलना अस्पष्ट लगती है, अर्थात हम नहीं कह सकते कि एक समूह की गतिशीलता दूसरे की तुलना में अधिक है। हालाँकि, अनुसूचित जातियों/जनजातियों के मध्य हम काफी (और ज्यादा) निम्नवर्ती गतिशीलता का प्रमाण पाते हैं। अ-गतिशीलता का विचारणीय स्तर, विशेषकर कम-कुशल और अल्प-भुगतान वाले व्यवसायों में, इंगित करता है कि भारत में अवसर की काफी असमानता है।[26]

यह देखते हुए कि समृद्ध और अमीरों के आई.एच.डी.एस. सर्वेक्षण (जैसा एन.एस.एस. समेत अन्य राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के मामले में भी है) में निम्न प्रतिनिधित्व की सम्भावना है, हम मानते हैं कि वास्तविक गतिहीनता और अवसर की असमानता हमने जो दस्तावेजीकृत किया है उसकी तुलना में कहीं अधिक है। हमारे द्वारा उपयोग किए गए डेटा की सीमाओं को देखते हुए, हम अपने दावों में सतर्क रहना चाहते हैं। हम इस विश्लेषण को भारत में वर्ग और व्यावसायिक गतिशीलता के मुद्दे को समझने के हमारे प्रथम प्रयास के रूप में देखते हैं।

भारत में व्यावसायिक गतिशीलता पर हुए अन्य अध्ययनों से हमारे निष्कर्षों की तुलना करना दिलचस्प होगा। हालाँकि, जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया है, ऐसे अध्ययनों की कमी है। ऐसा एक प्रासंगिक और हालिया अध्ययन (Hnatkovska et al2011) 1980 के दशक तक के एन.एस.एस. डेटा पर आधारित है और अन्तरपीढ़ी शिक्षा, आय और व्यावसायिक गतिशीलता को देखते हुए जाति के मुद्दे पर काफी हद तक ध्यान केन्द्रित करता है। हमारा केन्द्र, प्रविधि और डेटा उनके अध्ययन से अलग है। उनका व्यापक निष्कर्ष यह है कि पिछले दो दशकों में परिवर्तन ने गतिशीलता के लिए जाति बाधाओं को तोड़ दिया है।[27] अन्तरपीढ़ी गतिशीलता अध्ययनों और उनकी प्रतिगमन-आधारित प्रविधि के सन्दर्भ में एन.एस.एस. डेटा की सीमाओं को देखते हुए, उनके निष्कर्ष हमें विचारोत्तेजक और अत्यन्त आशावादी लगते हैं। उनके अध्ययन में प्रस्तुत संक्रमण आव्यूह केवल तीन व्यावसायिक श्रेणियों का उपयोग करते हैं, इसलिए हमारे विश्लेषण और निष्कर्षों के साथ उनकी तुलना समस्याप्रद है। लेकिन, यदि हम इसको अनदेखा करते हैं और 2004-05 (जो कि प्रासंगिक तुलना है) के लिए उनके आकलनों का परीक्षण करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि उनकी विकर्ण प्रविष्टियाँ काफी उच्च हैं, विशेषकर निम्नतम व्यावसायिक श्रेणी के लिए– 77% और 79% क्रमशः गैर-अनुसूचित जातियों/जनजातियों और अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए। इसके अलावा, उनके आकलन भी गैर-अनुसूचित जातियों/जनजातियों की तुलना में, अनुसूचित जातियों /जनजातियों के लिए ज्यादा निम्नवर्ती गतिशीलता (सबसे निम्न श्रेणी में जाने वाले बेटों के मामले में) दिखाते हैं।

अन्य देशों (विशेष रूप से विकसित दुनिया में) के अध्ययनों से इसकी तुलना करना भारत और इन देशों के बीच महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक और संस्थागत अन्तरों के अस्तित्व को देखते हुए समस्याप्रद हो सकता है। हालाँकि, अपने निष्कर्षों को परिप्रेक्ष्य में देखने के लिए, हम कुछ अन्य देशों के परिणामों को प्रस्तुत कर रहे हैं। कोग्नेउ और मेस्पल-सोम्प्स (Cogneau and Mesple-Somps 2008, तालिका 5) कुछ चयनित अफ़्रीकी देशों में व्यावसायिक गतिशीलता का विश्लेषण करने के लिए व्यक्तियों को किसानों, गैर-किसानों और निष्क्रिय लोगों (जैसे, विद्यार्थी) में विभाजित करते हैं। किसानों का प्रतिशत जिनके बेटे भी किसान बन जाते हैं, इन देशों में भारत की तुलना में (भारत के 43.25% की तुलना में यूगांडा का 71%) अधिक हैं। जब हम विकसित देशों को

देखते हैं (संयुक्त राज्य और ब्रिटेन के लिए, लांग एंड फेरी (Long and Ferrie) को देखें (2005, तालिका 1), हालाँकि यह पुराने डेटा प्रस्तुत करता है), हम देखते हैं कि किसानों का वह प्रतिशत जिनके बेटे भी किसान बनते हैं, भारत की तुलना में बहुत कम है (20.9%)। अकुशल श्रमिकों के लिए भी ऐसा ही परिणाम देखा जा सकता है। कोई शायद यह तर्क दे सकता है कि भारत में व्यावसायिक गतिशीलता गरीब अविकसित देशों (अफ्रीका) और उन्नत पूँजीवादी देशों के बीच में कहीं पड़ती है।

हम मानते हैं कि अन्तरवैयक्तिक और अन्तरपीढ़ी गतिशीलता का विश्लेषण महत्त्वपूर्ण अभ्यास है। हम यह भी मानते हैं कि इस मुद्दे पर भारत में श्रमसाध्य काम की कमी मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाले डेटा की कमी के कारण है। हम आशा करते हैं कि हमारे अध्ययन ने उच्च गुणवत्ता वाले पैनल डेटा के संग्रहण के लिए पर्याप्त प्रेरणा प्रदान की है जो व्यक्तियों के लम्बे समय तक का डेटा उपलब्ध कराता है या पीढ़ियों के डेटा पर नजर रखता है, ताकि हम भविष्य में गतिशीलता पर और अधिक अध्ययन देख सकें।

सन्दर्भ

Acs, Gregory (2011): "Downward Mobility from the Middle Class: Waking Up from the American Dream", Pew Charitable Trusts, viewed on 15 December 2012 (http://www.pewtrusts.org/uploadedFiles/ wwwpewtrustsorg/Reports/Economic_ Mobility/Pew_PollProject_Final_SP.pdf).

Asadullah, M N and G Yalonetzky (2012): "Inequality of Educational Opportunity in India: Changes over Time and across States", *World Development*, 40 (6): 1151-63.

Balakrishnan, P, ed. (2010): *Economic Growth in India: History and Prospect* (New Delhi: Orient University Press).

Banerjee, A V and A F Newman (1993): "Occupational Choice and the Process of Development", *Journal of Political Economy*, 101(2): 274-98.

Bardhan, P (2010): *Awakening Giants, Feet of Clay: Assessing the Economic Rise of China and India* (New Jersey: Princeton University Press).

Bardhan, P K, S Bowles and H Gintis (2000): "Wealth Inequality, Credit Constraints, and Economic Performance" in Anthony Atkinson and François Bourguignon (ed.), *Handbook of Income Distribution* (North-Holland: Dortrecht).

Behrman, J R, A Gaviria and M Szekely (2001): "Intergenerational Mobility in Latin America", Working Paper No 452, Inter-American Development Bank/RES.

Björklund, A and M Jäntti (2000): "Intergenerational Mobility of Socio-Economic Status in Comparative Perspective", *Nordic Journal of Political Economy*, 26(1): 3-32.

Bourguignon, F, F H G Ferreira and M Walton (2007): "Equity, Effi ciency and Inequality Traps: A Research Agenda", *Journal of Economic Inequality*, 5(2): 235-56.

Bowles, S, H Gintis and M Osbourne-Groves (2005): "Introduction: Intergenerational Inequality Matters" in Samuel Bowles, Herbert Gintis and Melissa Osbourne-Groves (ed.), *Unequal Chances: Family Background and Economic Success* (Princeton, NJ: Princeton University Press).

Bowles, S (2006): *Microeconomics: Behavior, Institutions and Evolution* (Princeton: Princeton University Press).

Census (1981): *Household Tables* (New Delhi: Registrar General and Census Commissioner of India).

–(2001a): "Data Highlights", viewed on 7 May 2012 (http://censusindia.gov.in/Data_Products/Data_Highlights/Data_Highlights_link/data_highlights_hh1_2_3.pdf).

–(2001b): "Household Size", viewed on 7 May 2012 (http://censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_data_finder/H_Series/Household_Size.htm).

Cogneau, D and S Mesple-Somps (2008): "Inequality of Opportunity for Income in Five Countries of Africa", Working Paper No DT/2008-04, DIAL.

Chakravarty, S (1987): *Development Planning: The Indian Experience* (New Delhi: Oxford University Press).

Desai, S, A Dubey, B L Joshi, M Sen, A Shariff and R Vanneman (2010): *Human Development in India: Challenges for a Society in Transition* (New Delhi: Oxford University Press).

Dev, M S (2008): *Inclusive Growth in India: Agriculture, Poverty and Human Development* (New Delhi: Oxford University Press).

Djurfeldt, G, V Athreya, N Jayakumar, S Lindberg, A Rajagopal and R Vidyasagar (2008): "Agrarian Change and Social Mobility in Tamil Nadu", *Economic & Political Weekly*, 43(45): 50-61.

Drèze, J and A K Sen, ed. (2002): *India: Development and Participation* (New Delhi: Oxford University Press).

Driver, E D (1962): "Caste and Occupational Structure in Central India", *Social Forces*, 41 (1): 26-31.

Erikson, R and J H Goldthorpe (1992): *The Constant Flux: A Study of Class Mobility in Industrial Societies* (Oxford: Clarendon Press).

Fields, G S and E A Ok (1999): "Measuring Movement of Incomes", *Economica*, 66 (264): 455-72.

Formby, J, J Smith and B Zheng (2004): "Mobility Measurement, Transition Matrices and Statistical Inference", *Journal of Econometrics*, 120 (1): 181-205.

Ganzeboom, Harry B G and D J Treiman (1996): "Internationally Comparable Measures of Occupational Status for the 1988 International Standard Classifi cation of Occupations", *Social Science Research,* 25 (2):201-39.

Geweke J, R Marshall and G A Zarkin (1986): "Exact Inference for Continuous Time Markov Chain Models", *Review of Economic Studies,* 53(4): 653-69.

Gibbons, M (2010): "Income and Occupational Intergenerational Mobility in New Zealand", Working Paper No 10 (06), The Treasury, Government of New Zealand.

Giddens, A (2009): *Sociology (6th edition)* (Cambridge UK: Polity Press).

Guha, R (2011): "The Nation Consumed by the State", *Outlook*, 31 January.

Henrich, J, R Boyd, S Bowles, C Camerer, E Fehr and H Gintis (2004): *Foundations of Human Sociality: Economic Experiments and Ethnographic Evidence from Fifteen Small-Scale Societies* (New York: Oxford University Press).

Hnatkovska, V, A Lahiri and S B Paul (2011): "Breaking the Caste Barrier: Intergenerational Mobility in India", viewed on 1 December 2011 (http://faculty.arts.ubc.ca/alahiri/Intergeneration_4.pdf).

Horan, P M (1974): "The Structure of Occupational Mobility: Conceptualization and Analysis", *Social Forces*, 53 (1): 33-45.

Jalan, J and R Murgai (2008): "Intergenerational Mobility in Education in India", paper presented at the 5th annual conference of the Indian Statistical Institute, Delhi, India, December.

Jäntti, M, B Bratsberg, K Røed, O Raaum, R Naylor, E Österbacka, A Björklund and T Eriksson (2006): "American Exceptionalism in a New Light: A Comparison of Intergenerational Earnings Mobility in the Nordic Countries, the United Kingdom and the United States", IZA Discussion Paper No 1938, Institute of Labour.

Jayadev, A, S Motiram and V Vakulabharanam (2007): "Patterns of Wealth Disparities in India during the Liberalisation Era", *Economic & Political Weekly*, 42 (38), pp 3853-63.

Krishna, P and G Setupathy (2011): "Trade and Inequality in India", paper presented at the Columbia-NCAER Conference on Trade, Poverty, Inequality and Democracy, New Delhi, India, March.

Kumar, S, A Heath and O Heath (2002a): "Determinants of Social Mobility in India", *Economic & Political Weekly*, 37 (29): 2983-87.

– (2002b): "Changing Patterns of Social Mobility: Some Trends over Time", *Economic & Political Weekly*, 37 (40): 4091-96.

Long, J and J Ferrie (2005): "A Tale of Two Labor Markets: Intergenerational Occupational Mobility in Britain and the US since 1850", NBER Working Paper No w11253, The National Bureau of Economic Research.

Maitra, P and A Sharma (2009): "Parents and Children: Education across Generations in India", paper presented at the 6th annual conference of Indian Statistical Institute, Delhi, India, December.

Majumder, R (2010): "Intergenerational Mobility in Educational and Occupational Attainment: A Comparative Study of Social Classes in India", *Margin-The Journal of Applied Economic Research*, 4 (4): 463-94.

Motiram, S and L Osberg (2011): "Demand and Supply for Schooling in Rural India?", IGIDR Working Paper WP-2011-010.
Motiram, S and V Vakulabharanam (2011): "Poverty and Inequality in the Age of Economic Liberalisation" in D Nachane (ed.), *India Development Report 2011* (New Delhi: Oxford University Press).
Motiram, S and N Sarma (2011): "Polarisation, Inequality and Growth: The Indian Experience", ECINEQ Working Paper 2011-225, Society for the Study of Economic Inequality.
Munshi, K and M Rosenzweig (2009): "Why Is Mobility in India So Low? Social Insurance, Inequality, and Growth?", NBER Working Paper No 14850, National Bureau of Economic Research.
NCO (2004): "Revised Indian National Classification of Occupations (NCO) – 2004", Directorate Journal of Employment and Training, Ministry of Labour, Government of India, viewed on 1 March 2012 (http://dget.nic.in/nco/jobdescription/ welcome.html).
Panagariya, A (2008): *India: The Emerging Giant* (New York: Oxford University Press).
Planning Commission (2011): "Inclusive Growth: Vision and Strategy", Planning Commission, Government of India, viewed on 15 January 2012 (http://planningcommission.nic.in/plans/ planrel/fi veyr/11th/11_v1/11v1_ch1.pdf).
Roemer, J E (1982): *A General Theory of Exploitation and Class* (Cambridge MA: Harvard University Press).
– (1998): *Equality of Opportunity* (Cambridge MA: Harvard University Press).
– (2006): "Economic Development as Opportunity Equalisation", Cowles Foundation Discussion Paper, No 1583, Yale University.
Sarkar, S and B S Mehta (2010): "Income Inequality in India: Pre- and Post-Reform Periods", *Economic & Political Weekly*, XLV (37): 45-55.
Shorrocks, A F (1978): "Income Inequality and Income Mobility", *Journal of Economic Theory*, 19 (2): 376-93.
Singh, A (2011): "Essays on Inequality of Opportunity in India", PhD thesis, Indira Gandhi Institute of Development Research.

Solon, G (1992): "Intergenerational Income Mobility in the United States", *American Economic Review*, 82 (3): 393-408.
-(2002): "Cross-Country Differences in Intergenerational Earnings Mobility", *Journal of Economic Perspectives*, 16(3): 59-66.
Sommers, P and J Conlisk (1979): "Eigen Value Immobility Measures for Markov Chains", *Journal of Mathematical Sociology*, 6(2): 253-76.
Swaminathan, M (1991): "Gainers and Losers: A Note on Land and Occupational Mobility in a South Indian Village, 1977-85", *Development and Change*, 2(2): 261-78.
The Probe Team (1999): *Public Report on Basic Education in India* (New Delhi: Oxford University Press).
Van De Gaer, D, E Schokkaert and M Martinez (2000): "Three Meanings of Intergenerational Mobility", *Economica*, 68 (272): 591-537.
Vakulabharanam, V (2010): "Does Class Matter? Class Structure and Worsening Inequality in India", *Economic & Political Weekly*, 45 (29): 67-76.
Weil, D (2009): *Economic Growth* (New Delhi: Pearson Education).
Weisskopf, T (2011): "Why Worry about Inequality in the Booming Indian Economy", *Economic & Political Weekly*, 46 (47): 41-51.

टिप्पणियाँ

[1] भारत में विकास के व्यापक विवरण के लिए, बालकृष्णन (Balakrishnan, 2010) देखें।

[2] प्रासंगिक अध्ययनों की सूची लम्बी होगी, किन्तु बर्धन (Bardhan, 2010) और पनगड़िया (Pangariya, 2008) कुछ हालिया अध्ययन हैं। इनके शीर्षक काफी कुछ दर्शाने वाले हैं– *अवेकनिंग जाईन्ट्स (Awakening Giants), फीट ऑफ क्ले : असेसिंग दी इकोनॉमिक राइज ऑफ इंडिया एंड चाइना* और *इंडिया (Feet of Clay: Assessing the Economic Rise of India and China and India), दी इमर्जिंग जायंट (The Emerging Giant)।*

[3] अकादमिक और नीति हलकों में 'समावेशी विकास' पर जोर इन चिन्ताओं का प्रतिबिम्ब है। 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) ने समावेशी विकास को प्रमुख उद्देश्य (योजना आयोग 2011) के रूप में निर्दिष्ट किया। समावेशी वृद्धि पर अकादमिक चर्चा के लिए देव (Dev, 2008) को देखें।

[4] कुछ पुराने अध्ययन हैं जिन्होंने कुछ विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित किया है : तमिलनाडु में गोकिलपुरम गाँव से स्वामीनाथन (Swaminathan, 1991), पूना से होरन (Horan, 1974), और नागपुर से ड्राइवर (Driver, 1962)। अन्तरपीढ़ी गतिशीलता शोध का एक उर्वर क्षेत्र है और कई देशों (विकासशील एवं विकसित) पर अध्ययन अस्तित्व में हैं, जैसे लॉन्ग एंड फेर्री (Long and Ferrie, 2005) (अमरीका तथा ब्रिटेन); सोलन (Solon, 1992, 2002) (संयुक्त राज्य), बोल्स व अन्य (Bowles et al, 2005) (संयुक्त राज्य); बेहर्मन व अन्य (लातिनी अमरीका– ब्राज़ील, कोलम्बिया, मेक्सिको और पेरू), जांटी व अन्य (Jantti et al, 2006) (नार्डिक देशों, संयुक्त राज्य और ब्रिटेन), कोग्नेउ और मेस्पल-सोप्स (Mesple-Somps, 2008) (अफ़्रीका-आइवरी तट, घाना, गिनी, मडागास्कर और युगांडा)।

[5] इस सम्बन्ध में एक रोचक उदाहरण संयुक्त राज्य है। कई लेखकों (उदाहरण के लिए लॉन्ग एंड फेर्री (Long and Ferrie, 2005) और उसमें उद्धरण) ने तर्क किया है कि यूरोपियन देशों की तुलना में, उच्चतर गतिशीलता के कारण पुनर्वितरण और समाजवादी पार्टियों का महत्व कम रहा है। अब हमारे पास यह दिखाने के लिए पर्याप्त सबूत है कि 'अमरीकी अपवादवाद' अधिकांशतः मान लिया गया है– वास्तविक गतिशीलता उससे काफी कम है जितना लोग सोचते हैं और जितना पूर्व विद्वत्तापूर्ण अध्ययनों ने पाया है (बोव्लेस et al, 2005)। इस गलत धारणा को बढ़ावा देने में विचारधारा, मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका (उदाहरण, होराशिओ अल्जीरिया की भाँति रंक से राजा बनने

की कहानियाँ; मामूली पृष्ठभूमि से आने वाले रोनाल्ड रीगन के कैलिफ़ोर्निया का गवर्नर और फिर अमरीका का राष्ट्रपति बनने जैसे अपवादों को उजागर करना) पर बहुत जोर नहीं दिया जा सकता।

[6] उदाहरण के लिए, कई छोटे पैमाने के समाजों (हेनरिच et al2004) के व्यापक तौर पर उद्धृत एक प्रयोगात्मक अध्ययन में लेखकों ने पाया है कि लोगों के अल्टीमेटम या सार्वजनिक सामानों के खेलने के तरीकों में अन्तर को इन लोगों के अपनी आजीविका को कमाने के तरीकों में अन्तर के आधार पर समझाया जा सकता है।

[7] ".. आधुनिक समाजों की मूल आर्थिक असमानताओं के केन्द्र में वर्ग विभाजन रहता है। सामाजिक वर्ग हमारे जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालना जारी रखता है, और वर्ग सदस्यता जीवन प्रत्याशा एवं समग्र शारीरिक स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा तक पहुँच से अच्छे वेतन वाली नौकरियों तक की विभिन्न असमानताओं से सह-सम्बन्धित है" (Giddens 2009: 470)।

[8] डीजेरफेल्ट व अन्य (Djurfeldt et al, 2008), एक हालिया अध्ययन को भी देखें जिसने तमिलनाडु राज्य के ग्रामीण इलाकों में अन्तरपीढ़ी गतिशीलता की जाँच (अन्य मुद्दों के बीच) की है।

[9] वे पाते हैं कि जब कोई साधनभूत चर प्रतिगमन (instrumental variable regression) के माध्यम से अभिभावकीय शिक्षा की अन्तरजातीयता की सम्भाव्यता पर विचार करता है, तब अगली पीढ़ी के शिक्षा के वर्ष अभिभावकीय (पिता या माता की) शिक्षा से सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण ढंग से जुड़ते नहीं हैं– अनिवार्य रूप से सार्वजनिक (और निजी नहीं) निवेश मायने रखता है। क्रमबद्ध प्रोबिट मॉडल का उपयोग करके स्कूल प्रगमन पर विचार करके, वे पाते हैं कि स्कूल या मध्य/माध्यमिक स्कूल जाने के लिए केवल माँकी शिक्षा महत्त्वपूर्ण है, जबकि उत्तर-माध्यमिक स्कूल के बाद प्रगति के लिए केवल पिता की शिक्षा प्रासंगिक है।

[10] “Der Apfel fällt nicht weit vom Stamm” (सेब पेड़ के करीब गिरता है)। हम आंद्रेआस मेटसचके (Andreas Metschke) को जर्मन में कहावत उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद देते हैं। ऐसी ही कहावतें अन्य भाषाओं में उपलब्ध हैं।

[11] ऐसी तुलनाओं में, विशेषकर अन्तरपीढ़ी गतिशीलता के सन्दर्भ में, एक मुद्दे को विशेष रूप से ध्यान में रखना होता है। अलग-अलग समय में किए गए ये सर्वेक्षण कुछ पीढ़ियों को शामिल करते हैं (जैसे, एक ही समय के आस-पास जन्मे लोग, जिसका शैक्षिक अवसरों और मजदूर बाजार स्थितियों पर प्रभाव पड़ता है जिसका वे सामना करते हैं) जिनमें कुछ आम हैं और कुछ अलग हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम 20-60 वर्षीय व्यक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और 1983 एवं 2004-05 के सर्वेक्षणों को देखते हैं, दोनों प्रतिदर्श 1940, 1950 तथा 1980 में जन्मे व्यक्तियों को रखते हैं। केवल पहला सर्वेक्षण 1920 एवं 1930 में जन्मे लोगों को रखता है, जबकि केवल बाद वाला 1970 एवं 1980 के दशक में जन्मे लोगों को रखता है।

[12] 2001 की जनगणना के अनुसार, 1, 2 एवं 3-4 सदस्यी घरों का प्रतिशत क्रमशः 3.9%, 8.2% और 30.9 प्रतिशत है।1981 की जनगणना के लिए सम्बद्ध आँकड़ा क्रमशः 5.6%, 8.4 % और 25.7% है। ये आँकड़े सामान्य परिवारों (घरविहीन या सांस्थानिक के लिए नहीं) के लिए हैं और जनगणना (2001अ) और जनगणना (1981) से क्रमशः 2001 और 1981 के लिए लिए गए हैं।

[13] इसका निश्चित रूप से यह अर्थ नहीं कि महिलाओं की व्यावसायिक गतिशीलता महत्त्वपूर्ण नहीं है, किन्तु डेटा इसका विश्लेषण करने की अनुमति नहीं देता है। और भारत में अधिकांश महिलाएँ, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, घरेलू उत्पादन में शामिल होना जारी रखती हैं। तो, गतिशीलता के परीक्षण में इसके प्रदर्शित होने की अपेक्षा है।

[14] समय के अनुसार, इस विश्लेषण में प्रयुक्त राज्य कार्यक्रमों को इस यूआरएल : http://www.igidr.ac.in/faculty/sripad/research.htm से डाउनलोड किया जा सकता है।

[15] किसान : जिसका वर्ष के दौरान घरेलू खेत पर खर्च किया गया समय घरेलू व्यवसाय पर या दूसरों के लिए काम करने में खर्च समय के बराबर या उससे अधिक है; गैर-कृषि कार्यों में स्व-नियोजित : घरेलू व्यवसाय पर खर्च किया गया समय घरेलू खेत पर खर्च किए गए समय से अधिक है या दूसरों के लिए किया गए काम पर बिताए गए समय के समान या उससे अधिक है; श्रमिक : दूसरों के लिए किए गए काम पर बिताया गया समय घरेलू खेत या घरेलू व्यवसाय पर बिताए गए समय से अधिक है। ध्यान दीजिए कि जब समय समान है, तब हम बराबरी को एक निश्चित तरीके से तोड़ रहे हैं। व्यक्तियों की वह संख्या (और अनुपात) जिनके लिए बराबरी का यह सम्बन्ध प्रासंगिक है, वह छोटी है और यदि हम इस बराबरी को अलग तरीके से तोड़ेंगे तब भी परिणाम नहीं बदलेंगे। व्यक्तियों के छोटे अनुपात ने कोई काम (अपने खेत पर, व्यवसाय या अन्य लोगों के लिए) करने में समय नहीं बिताया। हमने इन्हें नजरअन्दाज किया है, हालाँकिउनको शामिल करने पर भी परिणामों में कोई बदलाव नहीं आएगा।

[16] डेटा सेट में, हमारे पास उस नौकरी का विवरण है जिसमें लोग शामिल हैं, और हम यह निरीक्षण करने में सक्षम हुए कि 'अन्य' में से अधिकांश प्राथमिक व्यवसायों जैसे व्यवसायों में संलग्न हैं।

[17] हालाँकि आई.एच.डी.एस. डेटा में सीमाओं और तकनीकी कारणों (पहले ही चर्चा की जा चुकी है) से हम सटीक योजना लागू नहीं कर सकते।

[18] भुगतान, कौशल, हैसियत या 'वर्ग स्थिति' के सन्दर्भ में।

[19] एक चेतावनी जो यहाँ जोड़े जाने की आवश्यकता है कि ग्रामीण-शहरी प्रवास होता है, जिसका अर्थ है कि ग्रामीण क्षेत्र से किसी का बेटा शहरी क्षेत्र में जा सकता है और इसलिए उपरोक्त तालिका में उसकी गणना नहीं हो सकती है। अलग तरीके से कहा जाए तो, गतिशीलता आव्यूह में प्रविष्टियाँ वास्तविक गतिशीलता को कम आँक सकती है क्योंकि एक किसान का पुत्र ग्रामीण क्षेत्र को छोड़ सकता है और अलग व्यवसाय में शामिल हो सकता– और यहाँ शामिल नहीं है। इस पर विचार करने का एक तरीका इन आँकड़ों को प्रायिकता के रूप में समझना है कि पुत्र ग्रामीण क्षेत्र में रहता है और एक निश्चित श्रेणी से इस आधार पर सम्बद्ध है कि उसके पिता किसी विशेष श्रेणी से सम्बद्ध हैं। हम गतिशीलता आव्यूह को अखिल भारत स्तर पर भी प्रस्तुत करते हैं, जो ग्रामीण-शहरी प्रवास की सम्भावना को सम्मिलित करता है।

[20] इसका निश्चित रूप से यह मतलब है कि इन व्यवसायों को छोड़ने की सम्भावना/क्षमता कम है।

[21] प्रतिगमन को ऐसे प्रतिदर्श पर देखना होता है जो ऐसे व्यक्तियों से मिलकर बना है जिन्होंने शैक्षिक संस्थानों और मजदूर बाजार में विभिन्न समयों और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में प्रवेश किया है। समय और क्षेत्र प्रतिरूपियों / प्रभावों के इसको नियन्त्रित करने में अपर्याप्त होने की सम्भावना है।

[22] किसी व्यक्ति का व्यवसाय उसके घर के आकार या पारिवारिक संयोजन पर निर्भर कर सकता है *जब वह मजदूर बाजार में है* (अतीत में)। प्रतिदर्श केवल वर्तमान घरेलू आकार और पारिवारिक संयोजन को बताएगा, जिनके गलत प्रतिनिधि होने की सम्भावना है क्योंकि घरेलू आकार और संयोजन समय बदलने के साथ बदल सकता है।

[23] आय गतिशीलता पर साहित्य के उत्कृष्ट सर्वेक्षण के लिए, फ़ील्ड्स एंड ओके (Fields and Ok, 1999) को देखें। इन कुछ मापों के विवरण के लिए, शॉररॉक्स (Shorrocks, 1978), वैन डे गएर व अन्य (Van De Gaer et al

2000) और फॉरबि व अन्य (Formby et al, 2004) को देखें। कुछ लेखकों (जैसे, 1978) ने असम्भव परिणाम निकाले हैं, अर्थात उन्होंने दर्शाया है कैसे विभिन्न मानक एक-दूसरे के विरुद्ध प्रभावी हो सके।

[24] नीचे उल्लिखित M1 और अभिलक्षणिक मान-आधारित मापनों (M3 and M4) के विपरीत, दूरी-आधारित मापन का मान (M2) व्यवसायिक श्रेणियों (उदाहरण, किसान: 1, इत्यादि) को दिए गए लेबलों/ श्रेणियों पर निर्भर करता है। हम इन गतिशीलता मापनों का उपयोग केवल समूहों में (जाति, वर्ग समूह, इत्यादि) गतिशीलता की तुलना करने के लिए कर रहे हैं और इसलिए आमतौर पर हमारा परिणाम M2 के इस निश्चित गुण द्वारा प्रभावित नहीं है।

[25] मान लीजिए व्यवसायों का वितरण (अर्थात, विभिन्न व्यवसायिक श्रेणियों में व्यक्तियों का प्रतिशत) एक बिन्दु पर समय t में x(t) (a 1×m matrix) द्वारा दिया गया है। अगली पीढ़ी में व्यवसायों का वितरण x(t+1)=x(t)T होगा; 2 पीढ़ियों बाद यह x(t+2)= x(t+1)T=x(t)T2 होगा, और इत्यादि। जगह के हित में, हम यहाँ तकनीकी विवरणों में नहीं जाना चाहते हैं, किन्तु कुछ स्थितियों के तहत, यह प्रक्रिया x*= x*T द्वारा दिए गए व्यवसायों (x^*) के 'स्थिर अवस्था' वितरण में बदल जाएगी (जो एक पीढ़ी से दूसरी में नहीं बदलती है)।

[26] इस निष्कर्ष का सिंह (2011) ने भी समर्थन दिया है।

[27] उन्होंने पाया है कि अन्तर-पीढ़ी शैक्षिक और आय गतिशीलता दर अनुसूचित जातियों/जनजातियों और गैर-अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लिए मिल गई है। अनुसूचित जातियाँ/जनजातियाँऔर गैर-अनुसूचित जातियाँ/जनजातियाँ जिस दर से व्यवसाय बदल रहे हैं, वे समान हैं।